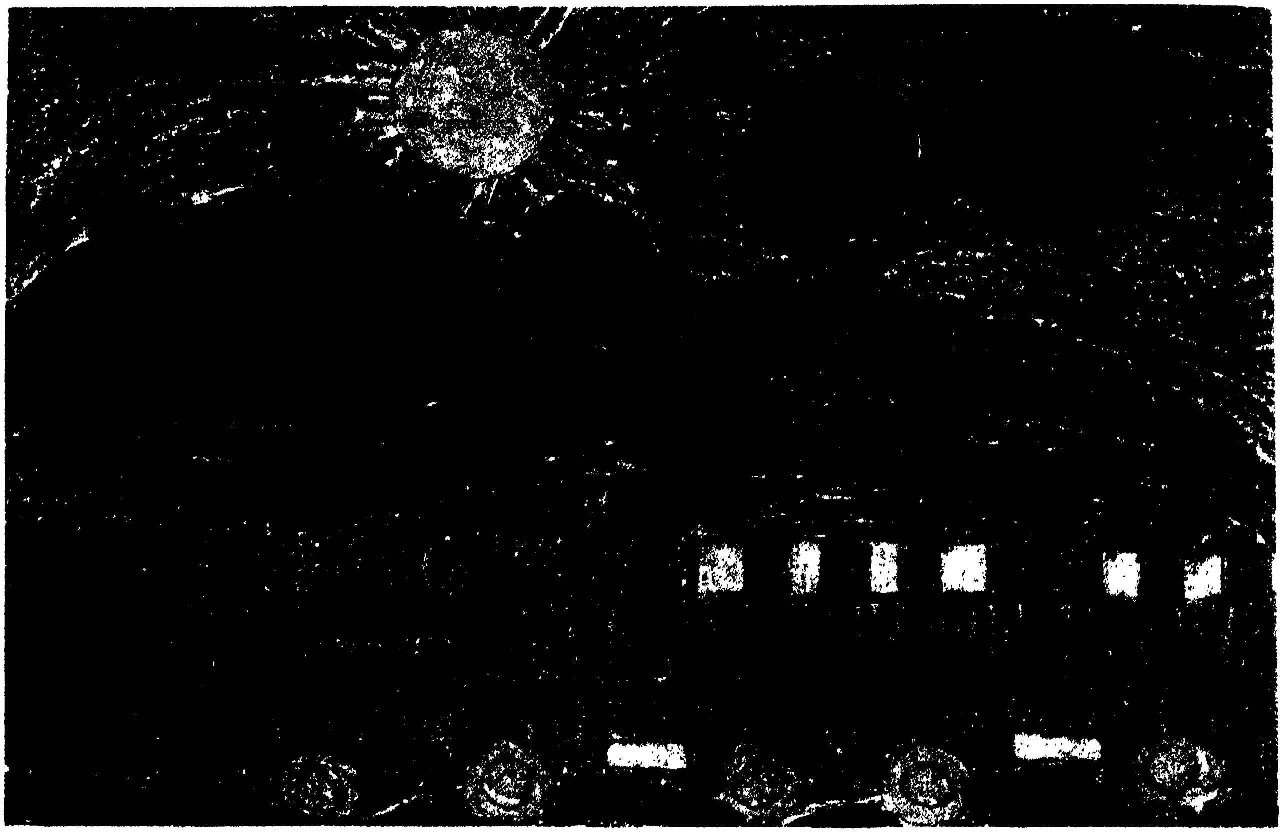

मेघा कानाणी, दूसरी, भावनगर, गुजरात

अनुज चौहान, टिमरनी, म.प्र.

प्रकाश, पाँचवीं, झुंझुनु, राजस्थान

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

118 वें अंक में ....

विशेष

20 ❑ पृथ्वी, सूरज, चाँद, तारे

नाटक

10 ❑ छींक

23 ❑ थप्प रोटी थप्प दाल

कविताएँ

9 ❑ मच्छर राजा

22 ❑ दो कविताएँ

29 ❑ चूहे के जज़्बात

धारावाहिक

34 ❑ मनुष्य महाबली कैसे बना?-22

हर बार की तरह

3 ❑ मेरा पन्ना

15 ❑ हमारे वृक्ष- 38 : शीशम

16 ❑ खेल-खेल में

30 ❑ माथा पच्ची

32 ❑ खेल कागज़ का

और यह भी

2 ❑ पाठक लिखते हैं

18 ❑ तुम भी बनाओ : ढालमापी

आवरण : शिवेन्द्र पाँडिया

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

पाठक लिखते हैं

चकमक का मार्च, 95 वाला अंक देखा। यह अंक अपने आप में बड़ा ही विशिष्ट है। इस अंक में छपे साधारण से दिखने वाले चित्रों को बताए गए खास तरीके से देखने पर जो थ्री-डी दृश्य दिखता है, वास्तव में अकल्पनीय है। हमने ऐसे चित्र पहले कभी नहीं देखे। गिरते हुए सिक्कों की चमक, उनमें छपी आकृति, ग्लोब में उभरते उत्तर तथा दक्षिण अमरीका के नक्शे, दूर तक फैली मछलीघर की मछलियाँ बहुत ही सुन्दर, स्पष्ट तथा आश्चर्यजनक थीं।

विशेष लेख 'आँख का धोखा' भी बहुत जानकारी युक्त है, सम्बंधित चित्र भी कम आश्चर्यजनक नहीं। अन्तहीन सीढ़ी, युवती से वृद्धा, घूमते गोले बहुत मज़ेदार लगे। उड़ता पक्षी बनाने की कोशिश करेंगे।

❑ कीर्ति तिवारी, नवमीं, धार, म.प्र.

मार्च अंक अद्वितीय है। सभी सम्पादन मण्डल सदस्यों को मेरा साधुवाद। आप सब बहुत श्रम से कार्य कर रहे हैं।

❑ हरदर्शन सहगल, बीकानेर, राजस्थान

जब-जब चकमक आती है
गीत कविता कहानी लाती है
विज्ञान प्रयोग बतलाती है
जब-जब चकमक आती है
माथा पच्ची, औरीगेमी सिखलाती है
कूड़े की माया बतलाती है
जब जब चकमक आती है
मुझे बहुत तड़पाती है
पर अब मेरी ये तड़प भी बुझ जाएगी
क्योंकि ये रचना मेरी
चकमक में छप जाएगी

❑ सुनील मालाकार, चकमक क्लब, सतवास, देवास, म.प्र.

चकमक पढ़ने में बहुत मज़ा आता है। पिछले अंक में जिराफ़ के बारे में जानकारी मिली जो बहुत अच्छी लगी। धूप कविता भी पसन्द आई।

❑ प्रभात कटारे, आठवीं, कुरवाई, विदिशा, म.प्र.

कई वर्षों से निरन्तर 'चकमक' का पाठक हूँ। पूर्णतया वैज्ञानिक-स्तर की बालोपयोगी सामग्री प्रकाशित होना पत्रिका के बढ़ते स्तर का परिचायक है।

'हिन्दी में बाल साहित्य की कमी है' ऐसी शिकायत अक्सर सुनने को, पढ़ने को मिलती रहती है। किन्तु एक अरसे से मैं लगातार पत्रिकाओं को देख, पढ़, सुनकर उक्त तथ्य को निराधार मानने लगा हूँ। क्योंकि निश्चित ही कुछ पत्रिकाएँ युगानुकूल-सामयिक साहित्य मनोवैज्ञानिक आधार पर प्रकाशित कर रही हैं।

कभी-कभी तो छोटे बच्चों के चित्र अनायास गम्भीर बन पड़ते हैं। धारावाहिक तथा माथापच्ची भी मनोरंजक तो होते ही हैं ज्ञानवर्द्धक भी। वर्ग पहेली में मुहावरों का भी ज्ञान करा देना काफ़ी मेहनती आर्टिकल बन जाता है।

बालोपयोगी साहित्य में कविताओं का काफ़ी महत्व होता है। कविता की गेयता उसे और भी ज्ञानवर्द्धक एवम् उपयोगी बनाती है - जो प्रत्येक अंक की कविता में उपलब्ध है ही ऐसा तो नहीं कहा जा सकता, क्योंकि कई बार प्रतिष्ठित कवियों की रचनाएँ (विशेषतः कविता) भी बाल जगत के साथ न्याय नहीं कर पातीं।

कविताओं के चित्र भी कवितानुकूल परिवेशयुक्त होना चाहिए, किन्तु ऐसा न होना अखरता है।

अप्रैल, 95 का अंक उत्कृष्ट सामग्री से युक्त विशिष्ट सामग्री 'ताल-तलैया' लिए था - जिससे काफ़ी उपयोगी जानकारी प्राप्त होती है। 'भोपाल का ताल' वैसे भी मशहूर तो है ही किन्तु बहुत कम बच्चों को उसके भूगोल का इतिहास ज्ञात था। ऐसी सामग्री के लिए साधुवाद स्वीकारें।

कहानियों का स्तर अभी तक अपेक्षित सुधार चाहता है। मेरी दृष्टि में बालोपयोगी लघुकथाएँ तथा बालकों के संक्षिप्त संस्मरण से कहानी लेखन की प्रवृत्ति भी परिष्कृत होगी तथा प्रेरणा भी मिलेगी।

आशा है आप पत्रिका को और भी अधिक उपयोगी सामग्री से युक्तकर बालकों का मानसिक विकास करते रहेंगे।

❑ किशन सोनी, सचिव, जनवादी लेखक संघ, रतलाम, म.प्र.

आपकी पत्रिका चकमक मुझे पढ़ने को मिली। इस पत्रिका को पढ़ने से मुझे बहुत अच्छी सीख मिली, लेकिन मैं यह नहीं जान पाया कि कौन-सी सीख मिली। मुझे लगा कि मैं भी इसका सदस्य बनूँ।

❑ अभिनय कुमार कुशवाहा, ऊमरी, रीवा, म.प्र.

मैं आपकी पत्रिका चकमक का नियमित पाठक हूँ। और चकमक में छपी हर सामग्री मुझे बहुत पसन्द है। सचमुच यह आपकी और आपके सहयोगियों की मेहनत का फल है। पत्रिका मनोरंजक और ज्ञानवर्द्धक है। यह पत्रिका बच्चों को जिज्ञासु और साहसी मनोवृत्ति का बनाती है।

आकाश में असंख्य तारे हैं, लेकिन चकमक जैसे कुछ तारे ऐसे भी हैं, जो अपने साथ-साथ दूसरों का भी हित करते हैं। चकमक रूपी तारा हर महीने हमारे पास चमचमाते हुए आता है। उपरोक्त बातों को आप झूठी प्रशंसा न समझें, यह सत्य है।

जब से घर में आया चकमक
कर दी मेरी दुनिया जगमग
बात बताता हरदम सच्ची
साथ में लाता माथा पच्ची
काग़ज़ यूनिसेफ़ से लाता
बच्चों से चित्र बनवाता
मूल्य है इसका अति ही कम
देख नव अंक भूल जाता ग़म

❑ रविकुमार पाण्डेय, खड्डा, रीवा

शिखा कहार, पाँचवीं, सुखतवा, होशंगाबाद, म.प्र.

राजीव धुर्वे, चौथी, घुघरी, म.प्र.

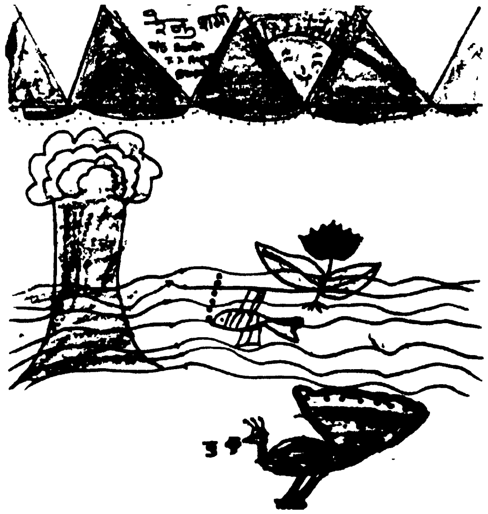

रेनु शर्मा, भोपाल, म.प्र.

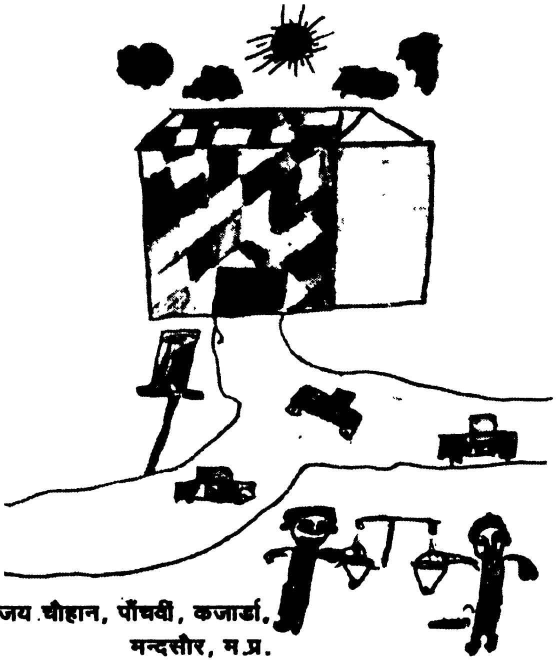

विजय चौहान, पाँचवीं, कजार्डा, मन्दसौर, म.प्र.

सुरेन्द सिंह बुन्देला, सेन्धवा, छतरपुर, म.प्र.

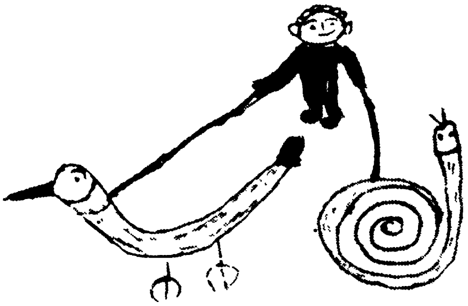

देव कल्याणी, तीसरी, किरगी, राजनांदगाँव, म.प्र.

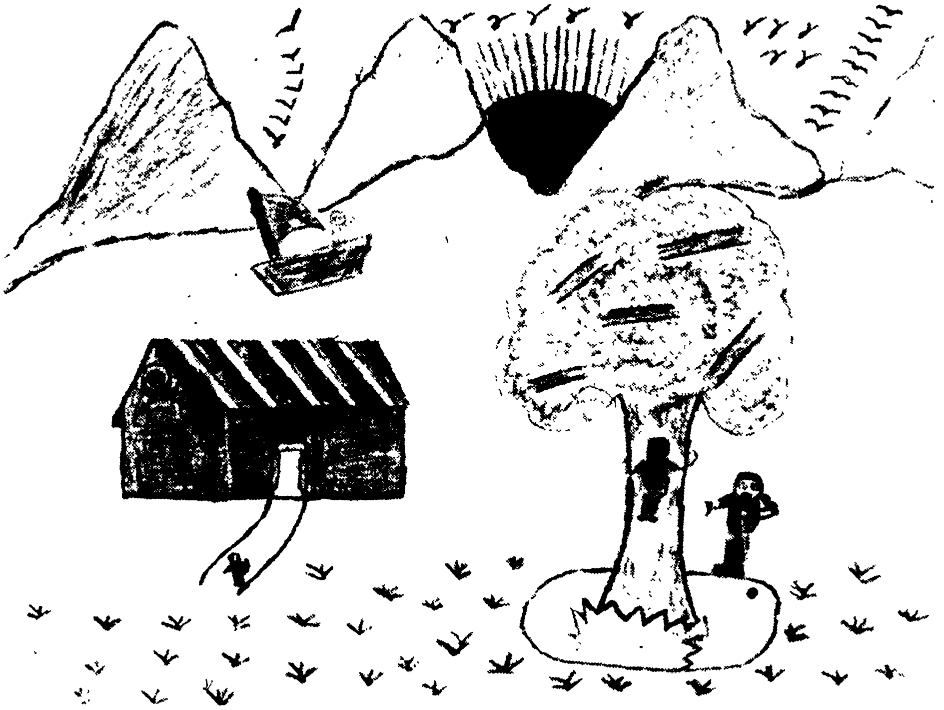

नरेश अग्रवाल, सातवीं, फालना, पाली, राजस्थान

बबूल का भूत

बात उन दिनों की है जब मैं चौथी क्लास में गाँव में पढ़ता था। जिस मैदान में हम लोग खेलते थे उसी मैदान की थोड़ी-सी दूरी पर कई बबूल के पेड़ थे। उनमें से एक बबूल का पेड़ उन सभी बबूल के पेड़ों से हटकर था। उस समय सभी लोग कहते थे कि उस बबूल के पेड़ पर दोपहर को तथा रात को भूत आते हैं। इस वहम के डर से सभी लोग एवं बच्चे उस पेड़ के पास नहीं जाते थे।

एक बार हम लोग क्रिकेट खेल रहे थे। एक लड़के ने गेंद को इतनी ज़ोर से मारा कि गेंद बबूल के पेड़ पर जा लगी। इस डर से कि गेंद भूत को लग गई और वह सभी को खा जाएगा, सब बच्चे भाग गए। वहाँ अकेला मैं दिवाल के पीछे छुप गया, क्योंकि मैंने कभी भूत को नहीं देखा और मैं भूत को देखना चाहता था। लेकिन जब बहुत देर हो गई और मुझे कहीं कुछ नहीं दिखा तो मैं सोचने लग गया कि भूत को गेंद लगी और वह आया नहीं? यह सोचकर मैं घर वापस चला गया।

दूसरे दिन मैं वहाँ गया और गेंद उठा लाया। जब मैं गेंद उठाकर घर आ गया तो जिस लड़के की गेंद थी वह अपनी गेंद पहचान गया। उसने सोचा कि इसे भूत ने पकड़ा नहीं? यह सोचकर वह भी बबूल के पास गया।

अब तो हम दोनों रोज़ बबूल के पास जाते। गाँव वालों ने सोचा कहीं इन्हें भूत तो नहीं चढ़ गया है। यह सोचकर गाँव वाले घबरा गए तथा ओझा बुला लाए। हमने उन्हें बताया भी कि वहाँ भूत नहीं है लेकिन गाँववालों ने हमारी बातों पर विश्वास नहीं किया। हमने कहा कि वे वहाँ खुद चलकर देख लें लेकिन उनमें से वहाँ पर कोई जाने के लिए तैयार नहीं हुआ।

एक बूढ़ा आदमी आया और कहने लगा कि बच्चे ठीक कह रहे हैं। सभी को वहाँ चलना चाहिए। उस बुजुर्ग की बात मानकर सभी आदमी उस स्थान की ओर चल पड़े वहाँ जाकर सभी को यक़ीन हो गया कि भूत दुनिया में हैं ही नहीं। इसके बाद सारे गाँव वालों ने हमें शाबाशी दी।

चौथी पास करने के बाद मैं भोपाल आ गया। यहाँ आकर मैंने देखा कि यहाँ पर भी एक बबूल के पेड़ को लेकर लोग कई बातें बना रहे थे।

❑ दीनदयाल मौर्य, आठवीं,
भोपाल, म.प्र.

नानी आई

नानी आई नानी आई
तेरी नानी आई
तूने चाय न पिलाई
तुझे शरम नहीं आई
मम्मी अभी तो मैं
पानी रखकर आई
उसमें शक्कर चाय
दूध नहीं मिलाई
जल्दी से जा उसमें
शक्कर चाय दूध मिला
और उसे जल्दी ला
मैं गई चाय दूध डाला
और जल्दी से ले आई
मेरी मम्मी ने चाय
पी और कहा
तेरी नानी आई
तूने चाय में शक्कर
नहीं मिलाई
तुझे शरम नहीं आई
मम्मी, जल्दी-जल्दी में मैं
भूल गई फिर से बनाऊँगी
उसमें सब कुछ मिलाऊँगी
नानी को चाय पिलाऊँगी।

❑ बंटी, तेरह वर्ष, इटारसी, म.प्र.

दयाराम पाटीदार, छठवीं,
पाँसिया, देवास, म.प्र.

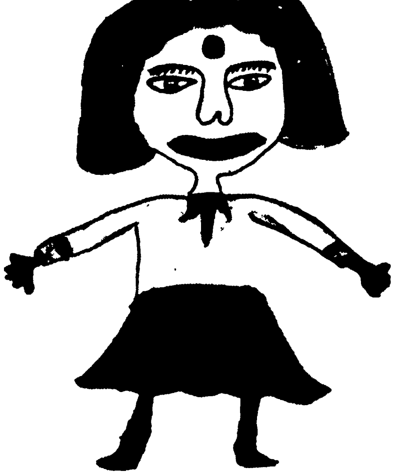

अभिलाषा चौरसिया, दस वर्ष,
पीसांगन, राजस्थान

नाक

चेहरे पर बैठी है तनकर
देखो यह अभिमानी नाक
सब अंगों की रानी नाक
सारी चीज़ें सूँघ-सूँघकर
पल भर में लेती पहचान
साँस इसी से लेते हैं हम
इसकी मुट्ठी में है जान
ऐसे-ऐसे गुण हैं इसमें
कहलाती है ज्ञानी नाक
सब अंगों की रानी नाक
कुछ भी अगर बुरा लगता है
फ़ौरन नाक सिकुड़ती है
गुस्से में ऊपर चढ़ जाती
छींकें उड़ें जब कुढ़ती है
हो जुकाम तो रोने लगती
खूब बहाती पानी नाक
सब अंगों की रानी नाक

❑ प्रवीण कुमार, दसवीं, पाली, राजस्थान

माण्डू की यात्रा

एक समय की बात है जब हम सभी दोस्त सावन के महीने में माण्डू गए थे। जब हम घर से निकले तो दो-तीन किलोमीटर चले और बारिश शुरू हो गई। हम सब गीले हो गए। हमारे पास साइकिलें थीं। एक साइकिल पर दो भाई थे। हम चार गए थे। धामनोद होते हुए गुजरीधार घाट चढ़े। हम सबेरे से चले, आठ बजे रात को माण्डवगढ़ पहुँचे। हम चारों का उपवास था। वहाँ पहुँचे तो बारिश भयंकर होने लगी। रात रुकने को हमें एक स्कूल का खाली हॉल था। वहीं रात गुज़ारी। जैसे-तैसे सबेरे उठे हाथ-मुँह धोकर चाय पी और चल दिए।

पहले हम रानी रूपमती का महल देखने गए। ऊपर चढ़कर देखा इतना सुन्दर, आसपास झाड़ियाँ, खाई दिखाई देती हैं। वहाँ से आनन्द लेते हुए हम गए हिन्डोला महल। वहाँ पर भी दृश्य का आनन्द लिया। फिर हम गए नीलकंठेश्वर। वहाँ नारियल चढ़ाया और वहाँ की गुफाएँ देखीं और फिर सात कोठरियाँ देखने गए। जिनमें कि नर्मदा में पानी नहीं रहता तो वहाँ भी पानी नहीं रहता। और फिर वहाँ से नौ सौ गुब्बारे देखे और वहाँ के राजाओं के प्रसिद्ध मन्दिर व घर देखे। माण्डू एक पहाड़ी पर स्थित है। हम वहाँ घूमघामकर आनन्द लेते हुए खुशी-खुशी घर पहुँचे।

❑ रूपसिंह पटेल, रणदा, कालीबावड़ी, धार, म.प्र.

तोते पर गुस्सा, सिर पे उतरा

एक बार एक तोता एक लड़के के घर के पीछे अमरूद के पेड़ पर अमरूद खा रहा था। वह तोता रोज़ अमरूद खाया करता था। एक दिन तोते को अमरूद खाते हुए उस लड़के ने देख लिया। उसे तोते पर बहुत गुस्सा आया। उसने तोते पर एक पत्थर फेंका। निशाना चूक जाने से तोता तो उड़ गया परन्तु तोता जिस डाल पर बैठा था वहाँ से पत्थर टकराकर उस लड़के के सिर पर आकर गिरा। और वह लड़का ज़ख्मी हो गया। और बाद में तोते के ऊपर पत्थर फेंककर बहुत पछताया।

❑ राकेश कुमार सागोटिया, सातवीं, ओगणा, उदयपुर, राजस्थान

कुत्ते ने काटा

जब मैं पाँच साल का था। एक बार अपने घर के सामने बैठा था। मेरे घर के सामने स्कूल था। मैं स्कूल देख रहा था तो अचानक एक कुत्ता दौड़ता आया और मुझे दबोच लिया। मैं ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया तो स्कूल के सर दौड़ते आए और कुत्ते को एक बड़ा पत्थर खींचकर मारा। कुत्ता भाग गया। उसने मेरे सिर में काटा था। मैं बेहोश हो गया। फिर सर और मोहल्ले वाले दौड़कर मुझे अस्पताल ले गए। उस समय मेरे पापा गाँव गए हुए थे। अस्पताल में मेरा इलाज हुआ। पाँचवें दिन मुझे होशंगाबाद ले गए। मुझे चौदह इन्जेक्शन लगे। फिर मैं ठीक हो गया।

❑ दीपक कुमार देवड़ा, टिमरनी, होशंगाबाद, म.प्र.

जीता कुमारी, बाजेड़ा, सूरत, गुजरात

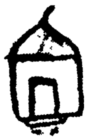

छुट्टी में क्या किया

मैं जून के महीने में अपने दादा काका के पास गई थी। वे हिड़ली गाँव में रहते हैं। मुझे गाँव में बहुत सारे दोस्त मिले। फिर हम सब ने दादा काका को पकड़ा। उनके साथ हमने एक मज़ेदार प्रोग्राम बनाया। हम सब रोज़ सुबह एक दूसरे को चकमक और विज्ञान की बहुत-सी पुस्तकों में से विज्ञान की बातें और प्रयोग ढूँढकर आपस में बताते थे।

एक दिन जाम्बुवन्त ने एक काँच को पानी के अन्दर कैंची से काटा। इस प्रयोग में हमको बहुत मज़ा आया। दादा काका ने हमको,

'संग्राम ज़िन्दगी है, लड़ना उसे पड़ेगा
जो लड़ नहीं सकेगा, आगे नहीं बढ़ेगा'

यह गीत सिखाया। शाम को दादा काका हमको योगासन सिखाते थे। हमें हल आसन, भुजंग आसन, सूर्य नमस्कार, लुढ़कना, लकड़ी काटना, रस्सी खींचना, सर्वांग आसन, चक्की चलाना, कौआ चाल, नौकासन और बहुत से आसन सिखाए। खुशाल ने एक दिन जापान के हिरोशिमा शहर पर बम गिराने की कहानी सुनाई।

एक दिन हमने मास्टरजी और लड़कों का नाटक खेला। प्रशान्त डायरेक्टर बना। मैं जलेबी बनी, प्रशान्त मास्टर जी और जुगल किशोर प्रिंसिपल बना। सब लड़के-लड़कियाँ ताली बजा-बजाकर खूब हँसे।

आख़िरी दिन गाँव के उपसरपंच एवं साधु बाबाजी और बहुत से गाँव के लोग आए। हम बच्चों ने उनको विज्ञान के प्रयोग और योगासन दिखाए। हम सब बच्चों ने मिलकर गीत गाया। मैंने एक डान्स किया। सबने हम सबको शाबाशी दी।

❑ नेहा व्यास, पाँचवीं, बैतूल, म.प्र.

मेरा पन्ना

कम्बल की चोरी

बड़गाँव में एक भोला नाम का नाऊ रहता था। लोग उसे बहुत काम देते थे। भोला दिन भर इधर-उधर घूमता रहता था। जब भूख लगती तब किसी के खेतों में घुसकर कुछ खा लेता। इसी प्रकार उसके दिन कट रहे थे।

जाड़े के मौसम में ठण्ड से बचने के लिए भोला को एक कम्बल की जरूरत थी। उसने अपने दोस्तों से कम्बल माँगा लेकिन किसी ने उसे कम्बल नहीं दिया। उसने वर्षों से कुछ पैसे बचाकर रखे थे। लाचार होकर उसने एक कम्बल ख़रीद लिया। कम्बल ओढ़कर जहाँ-तहाँ सो जाता था। अब उसे ठण्ड नहीं लगती थी। एक दिन भोला अपना कम्बल एक पेड़ के नीचे छोड़कर नदी में स्नान करने गया। स्नान करने के बाद जब वह वापस पेड़ के पास पहुँचा तो चौंक पड़ा क्योंकि कम्बल वहाँ नहीं था।

'अरे मेरा कम्बल कहाँ गया?' वह घबराकर बोला। उसने बहुत खोजा परन्तु कम्बल का कोई पता नहीं चला। वह बैठकर आँसू बहाने लगा। उसने कम्बल चोरी की बात पंच को बताई। वह अफ़सोस प्रकट करता हुआ बोला, "तुम थानेदार कल्लूराम के पास जाकर अपनी रिपोर्ट लिखा दो।"

"थानेदार कल्लू मुफ़्त में रिपोर्ट लिखेगा?" भोला ने शंका प्रकट की। "तुम तो जानते ही हो कि थानेदार भ्रष्ट है। वह बिना घूस लिए रिपोर्ट नहीं लिखेगा। घूस देने के लिए मेरे पास पैसे नहीं हैं।"

"थानेदार को घूस देने की कोई ज़रूरत नहीं है। मैं जैसा कहता हूँ तुम वैसा ही कहना। वह रिपोर्ट लिख लेगा। और तुम्हारा कम्बल ढूँढने की कोशिश भी करेगा।" पंच ने कहा।

उसकी बात सुनकर भोला रिपोर्ट लिखाने चला गया। थाने पहुँचकर थानेदार को नमस्कार किया। थानेदार ने नमस्कार कहा और पूछा, "क्या काम है?"

भोलाराम ने उत्तर दिया, "मेरा पूरा जीवन कोई चोरी करके ले गया, मैं क्या करूँ, मैं मर गया," और उसकी आँखों में आँसू आ गए।

थानेदार ने समझा भोला का सारा सामान चोरी चला गया है। इसलिए वह सामान ढूँढने निकल गया। उसने चोर पकड़ा और 10-12 डण्डे जमाए और वह चोर को थाने ले आया। फिर पूछा, "भोलाराम का सामान कहाँ है?"

उस चोर ने बताया, "मैंने मात्र कम्बल चुराया है।"

फिर थानेदार ने भोला से कहा, "क्यों तुम्हारा कम्बल ही चोरी गया है।" और कम्बल उसके सामने फेंका। भोला ने कम्बल पकड़ा और कहा, "जाता हूँ, थानेदार साहब, राम राम।"

भोला का कम्बल मिल गया। थानेदार खीझकर बोला, "कहाँ-कहाँ से ये लोग चले आते हैं।"

❑ कामदेव मार्शल, सातवीं, बड़गाँव, बस्तर, म.प्र.

तोता

रंग बिरंगे पंछी निराले।
काँव-काँव करते कौए काले।
कितना सुन्दर पंछी तोता।
कितना प्यारा मन को मोहता।

हरे पंख और चोंच लाल।
टैं-टैं करता करे कमाल।
मक्की और अमरूद है खाता।
बेचारे किसान को है सताता।

❑ गुरमीत सिंह, पाँचवीं, गढ़ीबारोद, शिवपुरी, म.प्र.

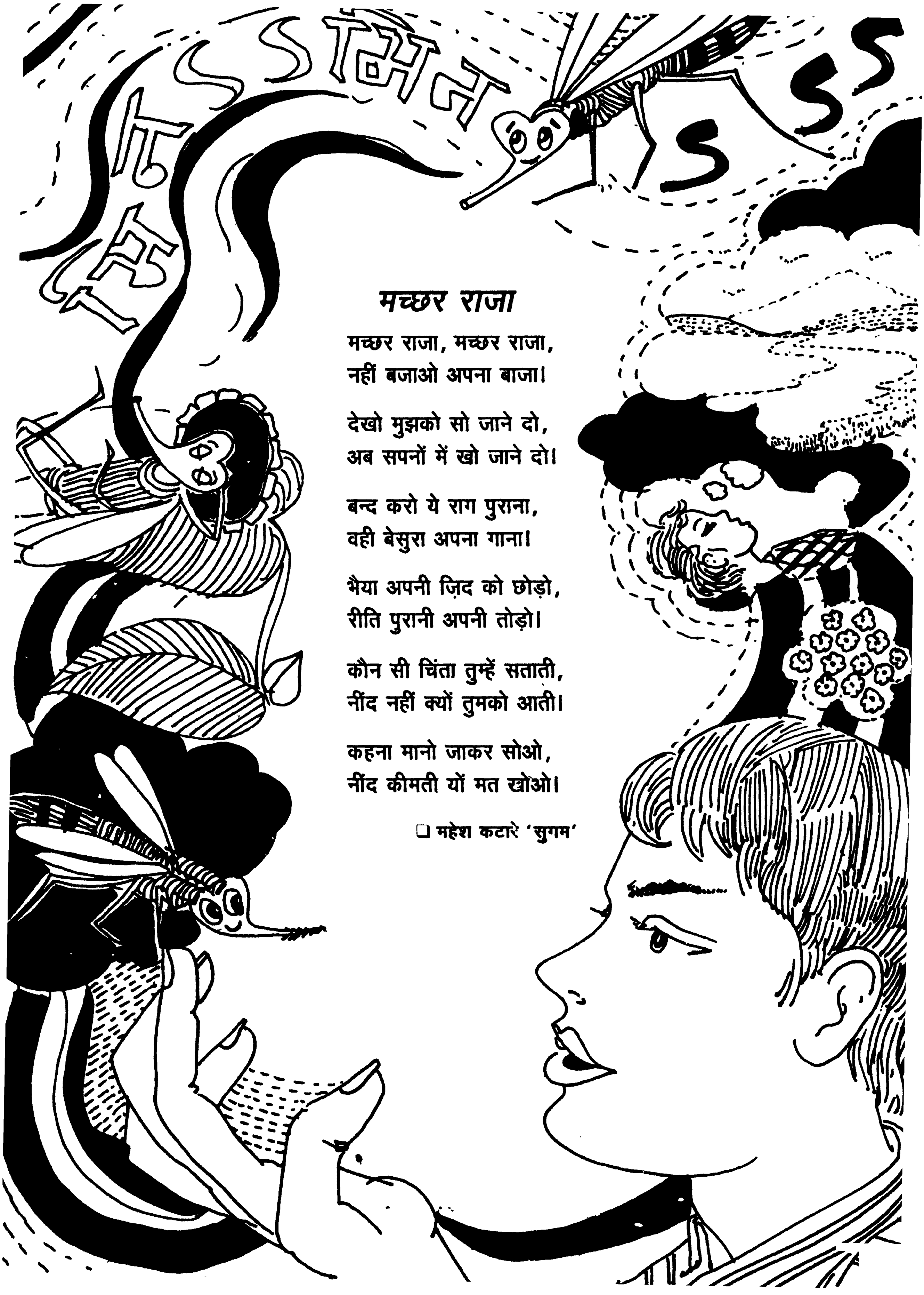

मच्छर राजा

मच्छर राजा, मच्छर राजा,
नहीं बजाओ अपना बाजा।

देखो मुझको सो जाने दो,
अब सपनों में खो जाने दो।

बन्द करो ये राग पुराना,
वही बेसुरा अपना गाना।

भैया अपनी ज़िद को छोड़ो,
रीति पुरानी अपनी तोड़ो।

कौन सी चिंता तुम्हें सताती,
नींद नहीं क्यों तुमको आती।

कहना मानो जाकर सोओ,
नींद कीमती यों मत खोओ।

❑ महेश कटारे 'सुगम'

छींक

❑ डॉ. रामकुमार वर्मा

[पंचम मिसिर का घर। प्रातः का समय है। वे सो रहे हैं। उनकी पत्नी गायत्री उन्हें जगाने की चिंता में है। नेपथ्य में ज़ोर से एक छींक होती है। दस सेकेण्ड बाद दूसरी होती है।]

गायत्री : *(पंचम मिसिर को जगाते हुए)* अरे, आज क्या सोते ही रहोगे? सात बज गए, इतना दिन चढ़ आया। *(पंचम मिसिर आलस भरे स्वर में अंगड़ाई लेते हैं।)* कल कह रहे थे, मुझे यह काम करना है, वह काम करना है। सात-सात बजे तक सोकर काम करोगे?

पंचम : *(जम्हाई लेकर अलसाए स्वर में)*
जय जय जय नटवर गिरधारी।
दिन भर राखो लाज हमारी।।

गायत्री *(उसी स्वर में)* कुंभकरन जी की बलिहारी।

पंचम *(अलसाए स्वर में)* ऐं, क्या कहा? सुन नहीं पाया। हाँ, तुम भी मेरे साथ प्रार्थना किया करो। *(फिर अंगड़ाई लेकर)* ओह! क्या दिन निकल आया? आज बड़ी जल्दी सूरज भगवान निकल आए।

गायत्री सूरज भगवान तो अपने समय पर ही निकलते हैं। तुम्हारी नींद तो जैसे कुंभकरन की धरोहर है, खुलने का नाम ही नहीं लेती।

पंचम शिव! शिव! धीरे-धीरे उठ रहा हूँ, भाई। ज़रा उठने दो। आज ज़रा कुछ नींद लग गई, तो सबेरे-सबेरे तुम सत्यनारायण की कथा बाँचने लगी। अभी उठता हूँ, हाथ-मुँह धोता हूँ, फिर ज़रा मुहूर्त देखकर निकलूँगा, तो देख लेना तुम्हारे द्वार पर सोना न बरसा दूँ तो मेरा पंचम मिसिर नाम नहीं। *(सहसा)* अरे हाँ, त्रिवेनी की माँ! मैं तो कहना ही भूल गया। रात में ऐसा बढ़िया सपना देखा है कि बस...उछल पड़ो।

गायत्री क्या उछल पड़ूँ? यही कहोगे कि सपने में सुनार की दुकान पर गया था।

पंचम *(प्रसन्नता से)* अरे त्रिवेनी की माँ! सुनार की दुकान क्या है उसके सामने। मैंने देखा कि...अहह, क्या देखा कि बस देखते ही रहो, तुम मुझे न जगाती तो हाय, हाय, मैं कहाँ से कहाँ पहुँच जाता!

गायत्री : चारपाई पर पड़े-पड़े?

पंचम : अरे, हँसी समझती हो, त्रिवेनी की माँ। अरे, मैंने वह देखा कि बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी नहीं देख सकते।

गायत्री : सो क्या देखा? मैं भी तो सुनूँ।

पंचम : सुनाऊँ? मैंने देखे हैं, विष्णु भगवान। अहह! क्या सीन था - विष्णु भगवान शेषनाग पर सो रहे हैं। साक्षात लक्ष्मी जी उनका पैर दबा रही हैं। तो, मैं दूसरी तरफ से पहुँचा और दूसरा पैर दबाने लगा। विष्णु भगवान ने मेरी तरफ देखा और पूछा, 'क्या चाहते हो, पंचम मिसिर?' मैंने कहा, 'हे दीनबंधु! दीनों के रखवाले। मैं यही चाहता हूँ कि लाला हरिकिशनदास की लड़की जानकी की शादी मनोहरलाल के लड़के से लगा दूँ।'

गायत्री : वाह, तुमने विष्णु भगवान से क्या माँगा? अरे, सोना, चाँदी कुछ माँगते!

पंचम : अरे त्रिवेनी की माँ, हरिकिशनदास की लड़की जानकी की शादी तो एक बहाना है बहाना! इस शादी के लगाने से घर में इतनी लक्ष्मी आएगी कि दो साल बाद त्रिवेनी की शादी कर लेना।

गायत्री : अच्छा, तो विष्णु भगवान ने क्या कहा?

पंचम : उन्होंने गणेश जी को बुलाया और उनके चूहे पर मुझे बिठाया।

गायत्री : चूहे पर बिठाया?

पंचम : हाँ, हाँ, साक्षात चूहे पर बिठाया। गणेश जी का चूहा कोई मामूली चूहा तो नहीं था? वह था एक बड़े हाथी के बराबर...जैसा हाथी हरिकिशनदास का है न!

गायत्री : फिर?

पंचम : फिर जैसे ही मैं चलने को हुआ लक्ष्मी जी ने बड़े ज़ोर से छींका।

गायत्री : लक्ष्मी जी ने?

पंचम : हाँ, हाँ, साक्षात लक्ष्मी जी ने मुँह फेरकर ऐसे ज़ोर से छींका कि...

गायत्री : अरे, वो तो सम्पत ने छींका था, जब तुम सो रहे थे।

पंचम : सम्पत ने? नहीं, मुझे तो ऐसा मालूम हुआ कि साक्षात लक्ष्मी जी ने छींका था।

गायत्री : नहीं, सम्पत ने छींका था।

पंचम : इस सम्पत को छींकने की क्या ज़रूरत पड़ गई? मेरे जगने में छींके तो छींके, मेरे सोते में भी छींकता है?

गायत्री : छींक आ गई होगी।

पंचम : ऐसे कैसे आ गई होगी? छींक अच्छी नहीं होती, त्रिवेनी की माँ, उससे बड़े-बड़े राज उलट जाते हैं।

गायत्री : पर ख़ैर, तुम्हारा राज तो नहीं उलटा?

पंचम : उलटे या न उलटे, पर उसे देख लूँगा, हाँ।

गायत्री : अच्छा तो बाद में देख लेना, अभी तो उठो।

पंचम : देखो त्रिवेनी की माँ। मैंने रात में पंचांग देख लिया है। हरिकिशनदास के यहाँ जाने का मुहूर्त नौ बजकर पन्द्रह मिनट पर है। अभी काफ़ी देर है। पर मैं इस गधे सम्पत को देखना चाहता हूँ। *(पुकारते हुए)* सम्पत! सम्पत!

सम्पत : *(बाहर से)* जी, पंडित जी।

(प्रवेश)

पंचम : क्यों रे, कल मैंने तुझसे क्या काम करने को कहा था?

सम्पत : पंडित जी, आपने कहा था कि चूहेदानी में नेवला पकड़कर रख लेना।

पंचम : तो चाहे मुझे सपने में चूहा दिख जाए, लेकिन चूहेदानी में तुझसे नेवला पकड़ते नहीं बनेगा।

गायत्री : चूहेदानी में नेवला?

पंचम : हाँ, चूहेदानी में नेवला। नेवला शकुन की चीज़ है। हमारे शास्त्रों में लिखा है कि घर से चलते समय अच्छा शकुन होना चाहिए। नेवले का देखना अच्छा शकुन माना जाता है। मैंने सम्पत से कहा कि चूहेदानी में नेवला पकड़ लेना और चलते वक्त मुझे दिखा देना।

गायत्री : सगुन का अच्छा इन्तज़ाम किया आपने!

पंचम : तो क्यों रे, तूने चूहेदानी में नेवला पकड़ा?

संपत : जी....जी...नेवला आया ही नहीं। मैंने कई बार पिंजरे में रोटी डाल-डालकर नेवले को दिखाया, पर वह आया ही नहीं।

पंचम : तो तेरी तरह नेवले के दिमाग़ भी चढ़ गए हैं? कमबख़्त समझते हैं कि उनका देखना शकुन है, तो नखरे दिखलाते हैं। पंचांग में इन कमबख़्तों का दिखना अपशकुन माना जाए, तब तो बात है।

सम्पत : ऐसा ज़रूर कर दीजिए, पंडित जी।

पंचम : *(चिढ़ते हुए)* ऐसा जरूर कर दीजिए, पंडित जी। और हाँ, तूने देवीदीन ग्वाले से कह दिया है कि जब मैं घर से चलूँ तो गाय और बछड़ा लेकर मेरे सामने दूध दुह दे?

सम्पत : देवीदीन से कह तो दिया है।

गायत्री : तो क्या यह भी कोई सगुन है?

पंचम : पंचम मिसिर की पत्नी होकर इतना भी नहीं जानती कि यह कार्यसिद्धि का सबसे बड़ा शकुन है? और हाँ, तुमने दही मँगा लिया है?

गायत्री : वह तो घर में ही है।

पंचम : बस, तो ठीक है, मैं उसे खाकर जाऊँगा। सम्पत, बाहर जाकर देख कि अभी देवीदीन तो नहीं आया?

सम्पत : बहुत अच्छा, पंडित जी। *(बाहर जाता है)*

पंचम : बात यह है, त्रिवेनी की माँ, कि हमारे शास्त्रों और पुराणों में जो कुछ लिखा है, वह झूठ थोड़े ही हो सकता है।

सम्पत : *(आकर)* पंडित जी। अभी देवीदीन नहीं आया।

पंचम : जब आए तब मुझे ख़बर देना, समझे? अब मैं उठता हूँ।

(उठते ही सम्पत ज़ोर से छींकता है।)

पंचम : *(उबलकर)* इस गधे ने फिर छींका। क्यों बे सम्पत लगाऊँ दो तमाचे?

सम्पत : मेरा कोई कसूर नहीं, पंडित जी।

पंचम : तो किसका है? मेरा है? मैंने छींका? देखो त्रिवेनी की माँ। मैं उठा और इसने छींका। यह सम्पत ऐन मौके पर छींकता है, मैं इस गधे की नाक काट डालूँगा, हाँ। गणेश जी की सूँड की तरह नाक बढ़ा ली है। जब देखो तब छींक! जब देखो तब छींक!

गायत्री : *(हँसकर)* कहीं गणेश जी की नाक छींकने से तो नहीं बढ़ गई है।

पंचम : ऐसी बात कहकर तुम मेरा गुस्सा दूर करना चाहती हो? मैं जानता हूँ। लेकिन यह छींक अच्छी नहीं होती, मैं बता देता हूँ।

गायत्री : जा रे सम्पत, बाहर जा।

(सम्पत बाहर जाता है।)

पंचम : मैं जानता हूँ, तुम उसको बचाना चाहती हो।

गायत्री : तो मैं यह जानना चाहती हूँ कि छींक की बात किस पुराण में लिखी है?

पंचम : छींक की बात जलपुराण में लिखी है।

गायत्री : जलपुराण में?

पंचम : क्यों, क्या तुम्हें शक है? अरे, हमारे यहाँ बहुत से पुराण हैं; अग्निपुराण, वायुपुराण हैं तो एक जलपुराण भी है।

गायत्री : पर जलपुराण का नाम तो कभी सुना नहीं।

पंचम : तो सुना तुमने किस-किस का नाम है? अरे इतना नहीं समझतीं कि जब तीन लोक के जानने वाले हमारे ऋषि-मुनियों ने अग्निपुराण लिखा, वायुपुराण लिखा तो क्या जलपुराण न लिखा होगा?

गायत्री : नहीं, ज़रूर लिखा होगा, पर जलपुराण का छींक से क्या सम्बंध?

पंचम : अरे जल के देवता कौन हैं? वरुण भगवान। और वरुण भगवान का स्थान है नाक, इसीलिए छींक से नाक से पानी निकलता है, इसीलिए हमारे ऋषि-मुनियों ने छींक का वर्णन जलपुराण में किया है।

गायत्री : ठीक है। अब बात समझ में आई। और पंडित आपकी तरह न समझा पाते होंगे।

पंचम : किसी ने इतना पढ़ा भी है, जितना मैंने पढ़ा है?

गायत्री : तो उठो, फिर जल्दी से तैयार हो जाओ। सेठ जी के यहाँ जाने का समय हो रहा है।

पंचम : अच्छी बात है, उठता हूँ।

(बाहर से देवीदीन पुकारता है।)

देवीदीन : पंडित जी महाराज!

पंचम : अब यह कौन आ गया? आज उठना भाग्य में नहीं बदा है। ***(ज़ोर से)*** कौन है?

देवीदीन : मैं, पंडित जी महाराज! मैं, देवीदीन। सम्पत भैयां कह रहे कि भिनसार गइया और बछया लेके हमारे घर के समनवाँ दुहि जायो। कौनौ हमार गइया कानी हौद में कइ दीन है। अब गइया तो आइ नहीं सकत। आज्ञा होई तो भैंस लाइ के दुहि देई। पर आपको सगर दूध लेइ पड़ी।

पंचम : नहीं, उसे लाने की ज़रूरत नहीं। आज दूध नहीं लगेगा। ***(अपने आप से)*** अच्छा शकुन रहा, गाय के बदले भैंस।

देवीदीन : जैसी मरजी, पालागी। ***(अपने आप से)*** ऐसे ने पंडित जी बना है। आपन टेंट में रुपैया धरे होइ हैं, पर गरीब की मदद नाही कइ सकत हैं।

पंचम : क्या कह रहे हो, देवीदीन?

देवीदीन : कुछै नहीं पंडित जी ***(ज़ोर से छींकता है)*** ई छीं...

पंचम : सुबह-सुबह छींकता क्यों है?

देवीदीन : का बताई पंडित जी। आपके बगलिया माँ कौनौ मरिचा पिसाई रहा है। ओईसे जौने का देखो तौन छींकत है। अब ही सम्पत भैया छींकत रहे। आ क् छीं।

(देवीदीन छींकता है। सम्पत का दौड़ते हुए प्रवेश)

सम्पत : पंडित जी ***(पंडित जी कहते ही उसको जोर से छींक आती है।)***

पंचम : ठहर, आज मैं तेरी छींक निकालता हूँ। अरे, मुझे भी छींक आ रही है। एं, ये छीं...आक् छीं। आक्...छीं।

(पर्दा गिरता है।)

(डॉ. हरिकृष्ण देवसरे द्वारा सम्पादित 'बच्चों के सौ नाटक' से साभार।)

सभी चित्र : जया

शीशम

शीशम के पेड़ से भले ही तुम सब परिचित न होओ, लेकिन शीशम नाम से परिचित होगे ही। इसकी लकड़ी से बने फर्नीचर के कारण अधिकांश लोग इसे जानते हैं। शीशम का पेड़ भारत में लगभग सभी जगहों पर मिलता है। पूरे उत्तर भारत में, बंगाल और असम में चाय के बगीचों और सड़क के किनारे ये ख़ूब लगाया जाता है। शीशम का पेड़ हिमालय क्षेत्र में डेढ़ हज़ार मीटर की ऊँचाई पर भी मिलता है। नदियों के किनारे वाले क्षेत्रों में भी इसके जंगल पाए जाते हैं।

शीशम का पेड़ लम्बा, सीधा होता है। यह छायादार पेड़ है। इस पेड़ की लम्बाई आमतौर पर 20 मीटर के लगभग होती है। यह पतझड़ी पेड़ है। पतझड़ में इसके सारे पत्ते झड़ जाते हैं। फिर कुछ दिनों तक यह बिना पत्तों का ही रहता है। वसन्त के आते ही शीशम के पेड़ में नए पत्ते आने लगते हैं। इसके पत्ते, छोटे बेर के पत्तों के आकार के होते हैं। इसके फूल हल्के-पीले रंग के होते हैं जो गुच्छों में खिलते हैं। इन फूलों में सुगन्ध भी होती है। इसके फल अप्रैल तक लग जाते हैं। ये फलियों की तरह होते हैं। इनकी लम्बाई 2 से 3 इंच तक होती है। जनवरी तक ये फलियाँ पककर गिरने लगती हैं। इनमें छोटे, चपटे बीज होते हैं।

शीशम का पेड़ बीज और कलम दोनों से लगाया जाता है। इसे लगाने के लिए रेतीली और दानेदार मिट्टी सबसे अच्छी होती है। इसे लगाने का सही वक़्त वसन्त का मौसम होता है। लेकिन पानी की कमी वाले इलाकों में अगस्त-सितम्बर में भी लगाया जाता है।

शीशम के पेड़ की लकड़ी के हिसाब से दो तरह का शीशम मिलता है। एक की लकड़ी खैर के रंग की होती है, दूसरे, की लकड़ी काले रंग की होती है। पेड़ की छाल भूरे रंग की होती है।

शीशम के पेड़ की लकड़ी से बनी मेज़, कुर्सी, अलमारी, पलंग आदि फर्नीचर की चीज़ें सबसे अच्छी मानी जाती है। इसकी लकड़ी के उपयोग के कारण ही इस पेड़ का महत्व बहुत ज़्यादा है। इसके बीजों से निकाला गया तेल और पत्तों को दवा के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

खेल खेल में

रेन्डियर

तुमने घोड़ागाड़ी और बैलगाड़ी देखी होंगी। इनमें पहिएदार गाड़ी को घोड़े या बैल खींचते हैं। उत्तरी ध्रुव के पास टुण्ड्रा क्षेत्र में कुछ अलग तरह की गाड़ियाँ होती हैं। बर्फ़ पर बिना पहिए की ये गाड़ियाँ वहाँ रेन्डियर खींचते हैं। कड़कड़ाती ठण्ड में दस-बारह किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ़्तार से गाड़ी खींचने वाले रेन्डियर को तुम भी अपने घर में ला सकते हो। इसके लिए किसी भी रंग का थोड़ा मोटा काग़ज़, कैंची, पेंसिल और गोंद लेकर बैठ जाओ।

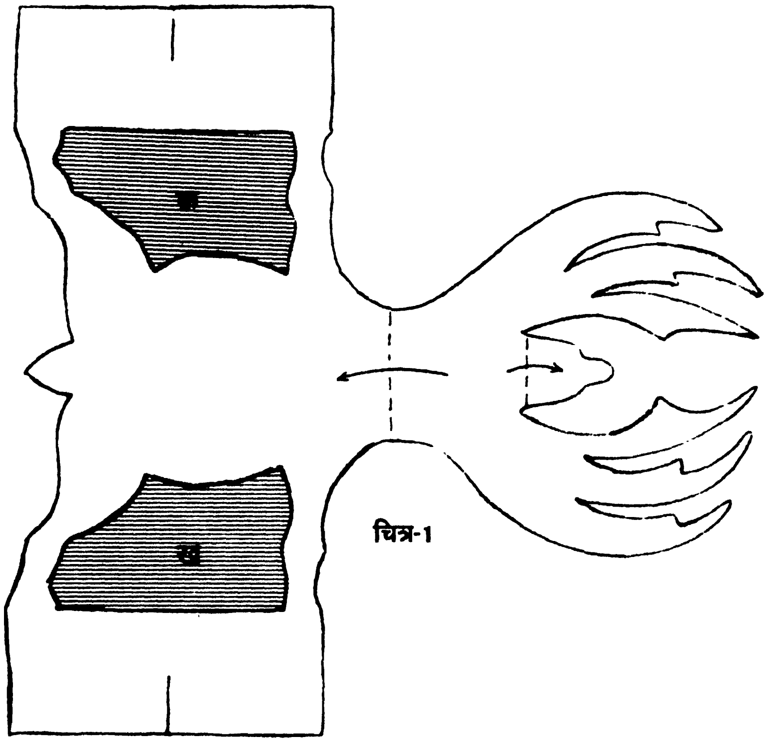

चित्र-1

सबसे पहले **चित्र-1** की तरह काग़ज़ पर रेखा चित्र बनाओ। इसके लिए चाहो तो पहले किसी पतले काग़ज़ पर या ट्रेसिंग काग़ज़ पर चित्र को उतार लो। फिर उससे मोटे काग़ज़ पर बनाओ।

चित्र उतार लेने के बाद उसे चित्र की बाहरी रेखा पर से काट लो। फिर चित्र के अन्दर के **क** और **ख** हिस्सों को भी काटकर निकाल दो।

चित्र 1 में तुम्हें दो टूटी रेखाएँ दिखाई दे रहीं हैं ना। उन पर तीर की दिशा में मोड़ बनाओ।

फिर इनको **चित्र 2** में दिखाई टूटी रेखा के हिसाब से बीच से मोड़ लो। मोड़ने के बाद पहले गर्दन के हिस्से को पकड़कर थोड़ा ऊपर की तरफ खींचो। फिर सिर को भी थोड़ा ऊपर की ओर खींचो। देखो **चित्र-3**।

ठीक-ठीक खींचने और मोड़ने के बाद तुम्हारे पास भी **चित्र-4** की तरह का रेन्डियर होगा। अब पैरों के नीचे के हिस्से पर दिखाई दे रही छोटी-सी रेखा पर कट लगाकर दोनों ओर के सिरों को आपस में फँसा दो। आखिरी चित्र देखो। ऐसा बना या नहीं? न बना हो तो कोशिश करो, जुगत लगाओ, ज़रूर बनेगा।

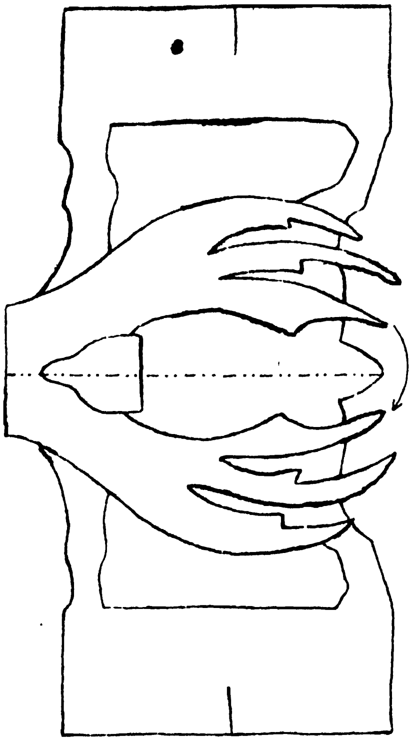

चित्र-2

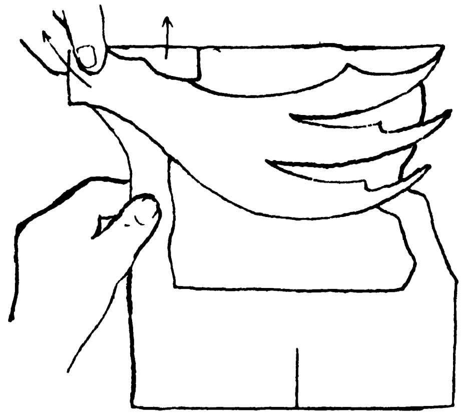

चित्र-3

चित्र-4

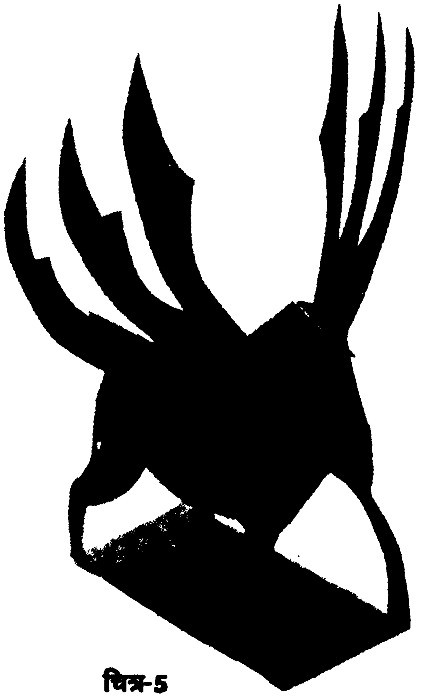

चित्र-5

ढालमापी

तुमने भूसर्वेक्षण करने वालों या दूसरे इंजीनियरों को ऊँचे पेड़ों, खम्भों या इमारतों की ऊँचाई नापते देखा होगा। जो यंत्र ये लोग उपयोग में लाते हैं उसे अंग्रेज़ी में क्लाइनोमीटर कहते हैं और हिन्दी में ढालमापी। 'ढालमापी' इसलिए क्योंकि यह यंत्र ऊँची वस्तु के सबसे ऊँचे बिन्दु और मापने वाले की आँख के बीच की ढलान की मदद से ही ऊँचाई का पता लगाता है। क्यों न तुम भी अपने लिए एक सरल-सा ढालमापी बना डालो।

इसके लिए प्लास्टिक का एक चाँदा, शरबत पीने की एक स्ट्रॉ, सुई, लगभग 15-20 से.मी. लम्बा मजबूत धागा, मोमबत्ती, दूरी नापने के लिए टेप, गोंद या सेलोटेप, पेंसिल चाहिए। और हाँ, माचिस की ज़रूरत भी पड़ सकती है।

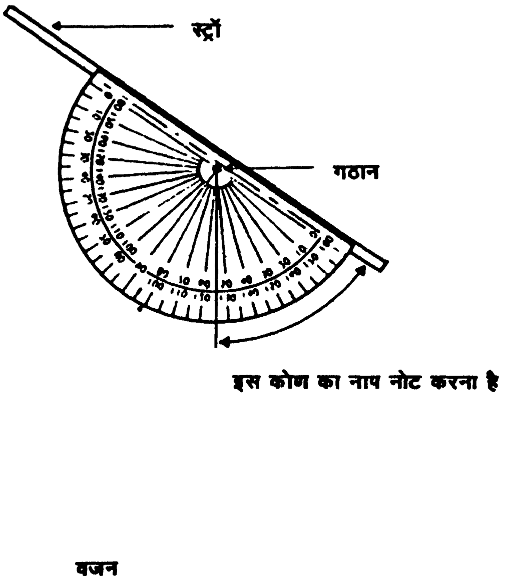

सबसे पहले यह देखो कि क्या तुम्हारे चाँदे में 0°- 0° वाली रेखा के बीच में छेद है? छेद मौजूद हो तो बढ़िया। न हो तो मोमबत्ती जलाकर सुई गर्म करके इस रेखा के ठीक बीच में एक छेद कर लो। धागे के एक सिरे को इस छेद में पिरोकर गठान लगा दो ताकि वह फिसलकर बाहर न आ जाए। दूसरे सिरे पर एक छोटा पत्थर या दूसरा कोई वज़न बाँध दो ताकि धागा एक सीधी लकीर की तरह तना रहे।

अब स्ट्रॉ को गोंद या सेलोटेप की मदद से चाँदे पर चित्र में दिखाए अनुसार चिपकाओ। ध्यान

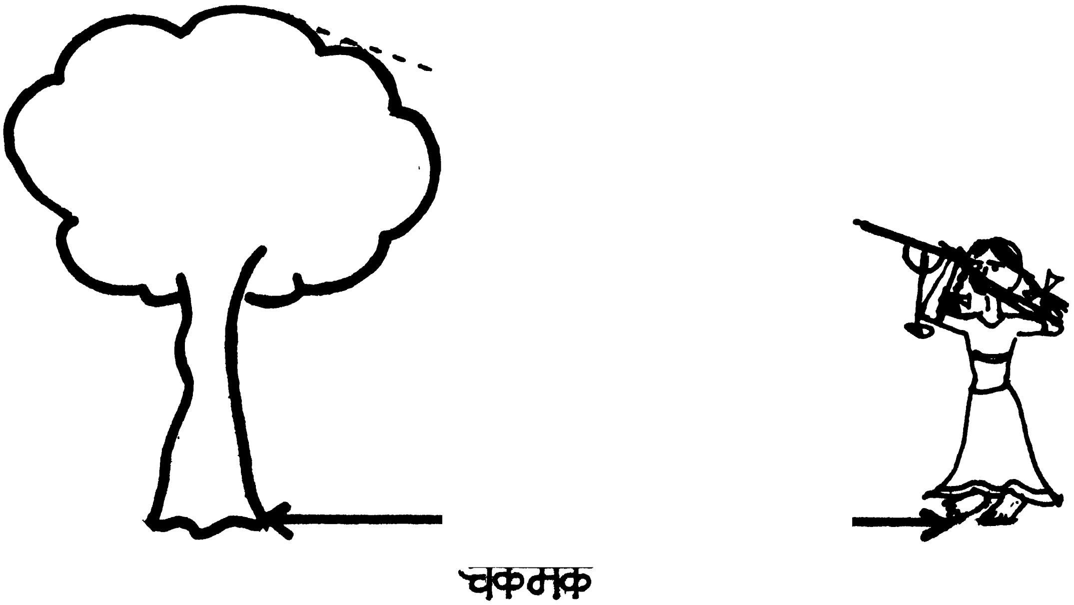

रहे कि स्ट्रॉ चाँदे की 0° वाली रेखा के समानान्तर हो।

यह हो गया ढालमापी तैयार। अब देखते हैं इसे इस्तेमाल करने का तरीका। इसके लिए तुम्हें अपने किसी दोस्त की मदद लेनी पड़ेगी। मान लो तुम किसी पेड़ की ऊँचाई नापना चाहते हो। तो दूरी नापने वाले टेप से उस पेड़ से ठीक 10 मीटर की दूरी पर खड़े हो जाओ। यह दूरी दोनों दोस्त ध्यान से टेप को ज़मीन पर रखकर नापना, टेप हवा में पकड़कर नहीं। ताकि नाप अधिक से अधिक सही आ सके।

अब यहाँ खड़े होकर ढालमापी के स्ट्रॉ में से या उसके बाजू से पेड़ के सबसे ऊँचे बिन्दु पर नज़रें जमाओ। जब ढालमापी का धागा इधर-उधर डोलने के बाद स्थिर हो जाए तो उसके द्वारा चाँदे पर दिखाया जा रहा कोण दोस्त से कहकर कॉपी में नोट करवा लो। ध्यान रहे तुम्हारी तरफ की शून्य वाली रेखा और धागे के बीच बन रहे कोण को नोट करना है।

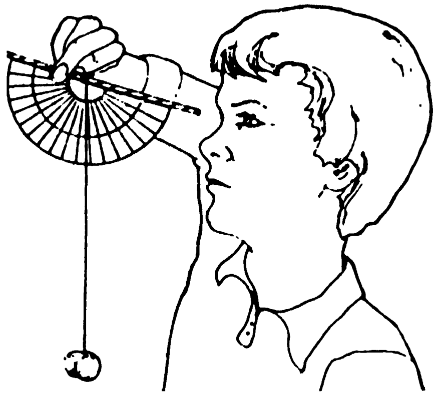

अब यहाँ दिए ग्राफ में कोण के माप के हिसाब से पेड़ की ऊँचाई पता करनी होगी। जो कोण कापी पर नोट किया है, उसे ग्राफ के 'क्ष' अक्ष पर ढूँढो। फिर 'य' अक्ष पर इस बिन्दु की ऊँचाई पता करो। यह हुई तुम्हारी आँख से ऊपर के पेड़ की ऊँचाई। इसमें अपने पाँवों से लेकर आँखों तक की ऊँचाई और जोड़ दो। कितना ऊँचा निकला तुम्हारा पेड़।

इसी तरह तुम अपने गाँव-मोहल्ले हर ऊँची चीज़ नाप सकते हो।

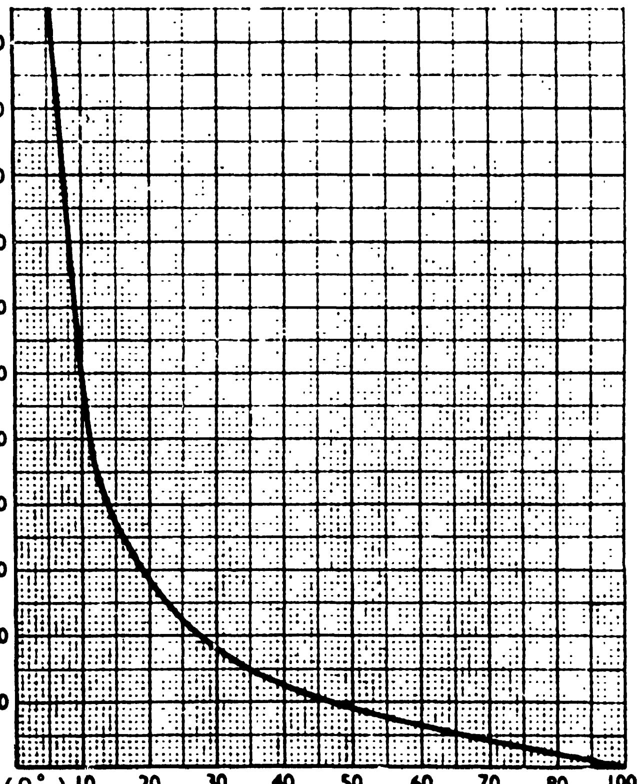

पृथ्वी, सूरज, चाँद, तारे

बंगाल की बुना जनजाति की एक दन्तकथा

बहुत बहुत साल पहले, प्राचीन काल में, दिन बहुत छोटे होते थे। लोग लगातार काम में लगे रहते थे। लेकिन दिन छोटे होने के कारण काम कभी पूरा ही नहीं हो पाता था। एक दिन इन लोगों ने एक सभा बुलाई और इस बात पर सोच-विचार किया कि दिन को कैसे बड़ा किया जाए। उनमें एक आदमी ऐसा भी था जो ख़ूब गर्मी बर्दाश्त कर सकता था। उसने सुझाव दिया कि अगर किसी तरीक़े से सूर्य को थोड़ा बाँध दें ताकि वह जल्दी-जल्दी ढल न पाए तो दिन कुछ बड़ा हो जाएगा। सब लोगों ने हामी भरी। उन्हें इस आदमी का सुझाव अच्छा लगा था।

फिर एक सुबह कुछ नौजवान एक दरख़्त पर चढ़े और सूर्य को एक रस्सी से बाँधने लगे। लेकिन गाँठ मारने में थोड़ी ग़लती हो गई। इस ग़लती की वजह से कुछ महीनों में तो सूरज धीरे-धीरे ढलता है पर कुछ महीनों में अब भी जल्दी- जल्दी ढल जाता है। इसी वजह से गर्मियों में दिन लम्बे होते हैं और सर्दियों में छोटे।

चित्र : दुताराम अधिकारी ('मिथ्स ऑफ मिडिल इण्डिया' से साभार)

अक्टूबर '95 में पूर्ण सूर्य ग्रहण

तुम भी इसके बारे में जानो

जब से पृथ्वी बनी है, तब से आकाश दिखता रहा है। पुराने से पुराने मानवों ने भी वही आकाश देखा है जो हम आज देखते हैं। आकाश में अजीबो-ग़रीब बदलाव होते हैं - रात, दिन, सूर्य का दिखना, चन्द्रमा व उसकी कलाएँ, तारे व उनकी गर्दिश, वग़ैरह-वग़ैरह। ज़ाहिर है इन सब बदलावों को समझने या इनसे पैदा हुए भय को दूर करने के लिए इतिहास में अनगिनत कथाएँ, दन्तकथाएँ, मिथक और विश्लेषण मौजूद हैं। ये मानव की संस्कृति का हिस्सा हैं, चाहे वे आज की विज्ञान की समझ से कितने ही अलग क्यों न हों। जहाँ एक ओर हमें वैज्ञानिक तथ्य समझना ज़रूरी है, वहीं उतना ही ज़रूरी है इन मिथकों और दन्तकथाओं को भी जानना! इसलिए नहीं कि ये सही या ग़लत हैं, बल्कि इसलिए कि ये हमें हमारी संस्कृति में झाँकने का एक मौका देते हैं।

❑ विनोद रायना

कौन-सी बात ज़्यादा आसानी से समझ में आई? बुना जनजाति की दन्तकथा या वैज्ञानिक जानकारी? वैज्ञानिक जानकारी में क्या समझ में नहीं आया, हमें लिखो। पृथ्वी, सूरज, चाँद, तारे आदि के बारे में तुम्हारे मन में कोई सवाल या जिज्ञासा हो तो वह भी लिखो।

जो हम आज जानते हैं :

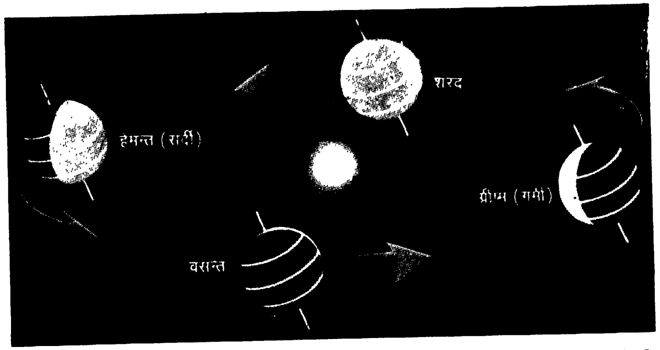

- पृथ्वी 30 कि.मी. प्रति सेकेण्ड की रफ़्तार से सूर्य के इर्द-गिर्द घूमती है। सिर्फ़ पृथ्वी ही नहीं, उसके साथ-साथ तुम-हम, पेड़-पौधे, मकान, नदी-नाले सब कुछ घूम रहे हैं। पर ताज्जुब है कि हमें पता ही नहीं चलता, है न! पृथ्वी का ऐसा एक चक्कर लगभग 365 दिन में पूरा होता है। जिसे हम एक साल कहते हैं।
- सूर्य से पृथ्वी की दूरी लगभग 14,96,00,000 किलोमीटर है।
- पृथ्वी अपनी धुरी पर भी घूमती है - लट्टू की तरह। इस तरह का एक चक्कर लगभग 23 घण्टे, 54 मिनट में (जिसे हम एक दिन कहते है) पूरा होता है।
- पृथ्वी अपनी धुरी पर झुकी हुई है। किससे झुकी हुई है? थोड़ा पेचीदा मामला है। पृथ्वी जब सूर्य का चक्कर लगाती है तो एक काल्पनिक तल बनता है - पृथ्वी के सूर्य के चारों ओर घूमने का तल। इसी तल से पृथ्वी अपनी धुरी पर 23.45 अंश से झुकी हुई है।
- इस झुकाव से मौसम भी बदलता है और दिन-रात भी छोटे-बड़े होते हैं। जब पृथ्वी का उत्तरी हिस्सा सूर्य की तरफ रहता है तो वहाँ गर्मी का मौसम रहता है और दिन भी लम्बे होते हैं। जब दक्षिणी ध्रुव सूर्य की ओर रहता है तो वहाँ गर्मी रहती है, जबकि उत्तरी क्षेत्र में सर्दी रहती है। ऐसे में दिन दक्षिणी क्षेत्र में लम्बे होते हैं और उत्तरी क्षेत्र में छोटे।
- बुना जनजाति का सूर्य को रस्सी से बाँधने का विचार प्रकृति में खुद-ब-खुद लागू हुआ है, यह जानकर तुम्हें ताज्जुब होगा। दिन का छोटा-बड़ा होना इस बात पर निर्भर है कि पृथ्वी अपनी धुरी पर कितनी तेज़ी से एक चक्कर पूरा करती है। चक्कर जल्दी पूरा होगा तो दिन-रात भी छोटे होंगे और अगर चक्कर लगाने में अधिक समय लगेगा तो दिन-रात बड़े हो जाएँगे।

कई कारणों से चन्द्रमा का पृथ्वी के गिर्द घूमने का कक्ष थोड़ा-थोड़ा बड़ा होता जा रहा है, यानी चन्द्रमा व पृथ्वी के बीच की दूरी बढ़ रही है। चन्द्रमा के कक्ष के बड़े होने से पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने की गति धीमी होती जा रही है।

आज से लगभग चार अरब वर्ष पहले पृथ्वी का एक दिन-रात केवल 22 घण्टे का था, जबकि आज 24 घण्टे का है। उस समय पृथ्वी व चन्द्रमा के बीच की दूरी भी आज से कुछ कम थी। चन्द्रमा के कक्ष के लगातार बड़े होते रहने से अरबों वर्षों बाद पृथ्वी का एक दिन-रात आज के 1440 घण्टों के बराबर होगा, ऐसी वैज्ञानिकों की गणना है। मज़ेदार बात यह भी है कि उस समय चन्द्रमा का पृथ्वी के गिर्द एक चक्कर आज के 27 दिन के बदले 1440 घण्टे यानी आज के 60 दिन में पूरा होगा।

जो रस्सी बुना जनजाति के लोग खोज रहे थे, वास्तव में वह एक तरह से सूर्य, पृथ्वी व चन्द्रमा के बीच का गुरुत्वाकर्षण बल है, जो कुछ-कुछ बदलता रहता है, यानी उसकी गाँठ बुना लोगों की गाँठ की तरह कुछ-कुछ खिसकती रहती है।

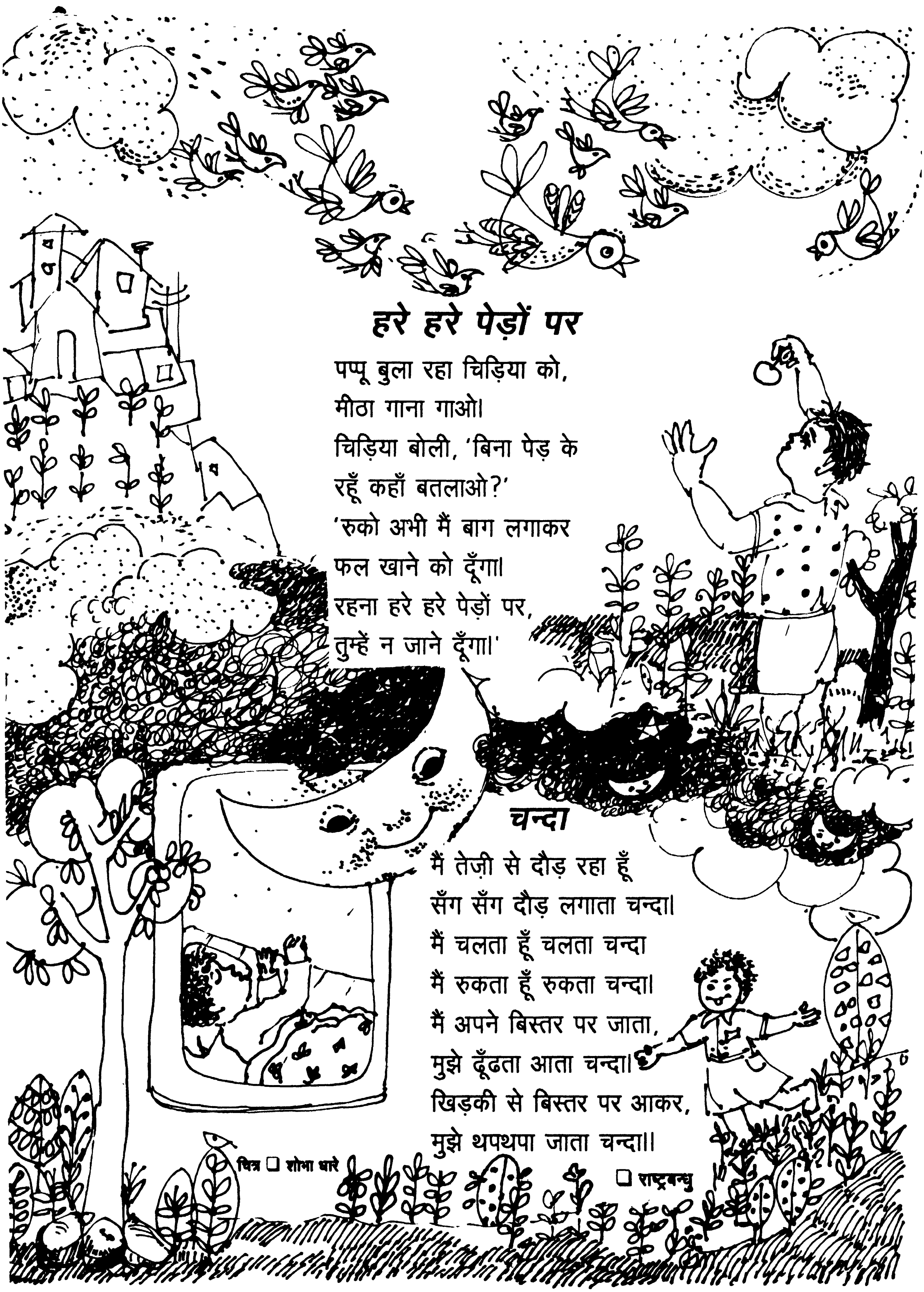

हरे हरे पेड़ों पर

पप्पू बुला रहा चिड़िया को,
मीठा गाना गाओ।
चिड़िया बोली, 'बिना पेड़ के
रहूँ कहाँ बतलाओ?'
'रुको अभी मैं बाग लगाकर
फल खाने को दूँगा।
रहना हरे हरे पेड़ों पर,
तुम्हें न जाने दूँगा।'

चन्दा

मैं तेज़ी से दौड़ रहा हूँ
सँग सँग दौड़ लगाता चन्दा।
मैं चलता हूँ चलता चन्दा
मैं रुकता हूँ रुकता चन्दा।
मैं अपने बिस्तर पर जाता,
मुझे ढूँढता आता चन्दा।
खिड़की से बिस्तर पर आकर,
मुझे थपथपा जाता चन्दा।।

चित्र ❑ शोभा घारे

❑ राष्ट्रबन्धु

थप्प रोटी थप्प दाल

❑ रेखा जैन

[पर्दा खुलने पर बच्चे खेलते हुए दिखाई पड़ते हैं। सब बच्चे हल्ला मचाते, हँसते हुए बड़े उत्साह के साथ खेल ही रहे हैं कि मुन्नी अपने घर से भागी-भागी वहाँ आती है और नीना को पुकारती है। नीना खेल छोड़कर सामने एक किनारे आ जाती है। पीछे खेल चलता रहता है।]

मुन्नी : *(पुकारकर)* ओ नीना, नीना सुन!

नीना : *(पास आते हुए)* क्यों, क्या बात है, मुन्नी? [एक ओर जाकर ज़रा धीमी आवाज़ में, ताकि खेल का छंद सुनाई पड़ता रहे।]

मुन्नी : देख नीना, आज मैंने अम्मा से आटा, घी, दाल, दही, साग, चीनी, मक्खन सब चीज़ ली हैं। चल, रोटी का खेल खेलेंगे।

नीना : रोटी बनाने का?

मुन्नी : हाँ हाँ।

नीना : हाँ, खूब मज़ा आएगा। चलो, उन लोगों को भी बुला लें। *(ताली बजाकर)* अरे चुन्नू, सरला सुनो, अब इस खेल को खेलते तो बहुत देर हो गई। चलो, अब रोटी का खेल खेलें।

सब : हाँ, हाँ यह ठीक है।

मुन्नी : अच्छा-अच्छा चलो। देख चुन्नू, तू और टिनकू, बाज़ार से साग-सब्जी लाने का काम करना।

नीना : नहीं मुन्नी, इन दोनों से ज़रा दाल बनवाएँगे और जब इनसे आग तक नहीं जलेगी तब मजा आएगा।

चुन्नु : तो क्या तू समझती है हम आग नहीं जला सकते? चल रे टिनकू, आंज इन्हें दाल बनाकर ही दिखा देंगे। क्यों?

टिनकू : हाँ, हाँ यार देख लेंगे।

मुन्नी : तो सरला, तू क्या करेगी?

सरला : मैं तो, भई तेरे दही का मठा चला दूँगी।

मुन्नी : और तरला, तू।

तरला : मैं? मैं तेरे संग रोटी बनाऊँगी।

नीना : देख तरला, रोटी तो मैं बनाऊँगी।

मुन्नी : ***(थोड़ा झल्लाकर)*** फिर सभी रोटी बनाएँगे तो बिल्ली कौन बनेगा? नीना तू बिल्ली बन जाना।

नीना : ***(चिढ़ाते हुए)*** तू बिल्ली बन जाना। वाह जी वाह, मैं बिल्ली बहुत बनी। अच्छा चलो, पुगन की पुगाई करके देख लो। जो चोर बनेगा, उसको ही बिल्ली बनना पड़ेगा।

[सब बच्चे घेरा बनाकर खड़े हो जाते हैं और मुन्नी हर बच्चे के ऊपर हाथ रखकर कहती जाती है।]

मुन्नी : अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बौं, अस्सी नब्बे पूरे सौ, सौ में लगा धागा, चोर निकल के भागा।

[आख़िरी शब्द के साथ हाथ नीना के ऊपर जाता है।]

चुन्नू ***(चिढ़ाते हुए)*** ले नीना, तू बहुत बच रही थी। ले बन गई न बिल्ली?

नींना ***(खिसियाते हुए)*** तो क्या हुआ, मुझे तो और भी मज़ा, मैं तुम्हारी सारी चीज़ें खा जाऊँगी।

[खेल शुरू होने से पहले संगीत स्वर। फिर संगीत स्वर धीरे-धीरे कम होता जाता है और मठा चलाने की हांडी लेकर अभिनय के साथ सरला और तरला रंगमंच पर आती हैं। फिर गगरी उतारने का और रई से मठा चलाने का अभिनय करती हैं। साथ ही गीत गाती हैं।]

सरला-तरला : घुम्मड़ घुम्मड़ दही बिलोवे, जाटनी का छोरा रोवे।
रोता है तो रोने दे, माँ को दूध बिलोने दे।

[गाते समय जाटनी के बेटे के रूप में एक बच्चा रोता हुआ जाटनी के पास आता है। वह उसे मक्खन देने का अभिनय करती है और प्यार से पास में बिठाकर फिर मठा चलाने लगती है। मुन्नी दौड़कर आती है। मठा देखने का अभिनय करती है।]

मुन्नी : वाह-वा, ख़ूब चलाया मठा, देखूँ यह मीठा है या खट्टा।

सरला : क्या देखोगी।
इस मठे का बढ़िया स्वाद, खाकर सब करते हैं याद।

मुन्नी : ***(मुस्कराकर)*** अच्छा। बड़ी शान है।

[चुन्नू, टिनकू कंधे पर बोझ रखे हुए आते हैं।]

तरला : यह लो, चुन्नू-टिनकू आए, देखें क्या तरकारी लाए।

चुन्नू : ***(बोझ उतारते हुए)*** ओ हो, पीठ रही है दूख।

टिनकू : मुझको लगी करारी भूख।

मुन्नी : ***(मुँह मटकाते हुए)*** बच्चूजी, भूख लगने से क्या होगा? अब पहले तुम आग जलाओ, और हांडी में दाल पकाओ।

चुन्नू : अरे हाँ।

चल जल्दी से दाल पकाएँ। बड़ियों का भी स्वाद चखाएँ।

[दोनों आग जलाने का, फूँक मारने, धुएँ से आए आँसू पोंछने का अभिनय करते हैं। फिर दाल और बड़ी पकाते हैं। कलछी से दाल चलाकर चखते हैं कि अँगुली जल जाती है। अँगुली जलने के अभिनय के साथ-साथ मुन्नी पास आकर इन्हें देखती है।]

मुन्नी : टिनकू ने पकाई बड़ियाँ, चुन्नू ने पकाई दाल,
टिनकू की बड़ियाँ जल गईं, चुन्नू का बुरा हाल।

[तरला तथा अन्य सहेलियाँ एक ओर से आती हैं। हाथ कमर पर इस प्रकार रखा है जैसे हाथ में डलिया हो। आकर बैठ जाती हैं। फिर गाकर रोटी पकाने का अभिनय करती हैं।]

लड़कियाँ : थप्प रोटी थप्प दाल,
खाने वाले हो तैयार।

[ये पंक्तियाँ दो बार गाई जाने के बाद चुन्नू और टिनकू के दोस्त एक पंक्ति में एक के पीछे एक कदम बढ़ाते हुए बड़ी शान के साथ आकर एक ओर

बैठ जाते हैं। फिर लड़कियों की ओर हाथ फैलाकर माँगते हुए गाकर दो बार कहते हैं।]

चुन्नू आदि : लाओ रोटी लाओ दाल, लाओ खूब उड़ाएँ माल।

[मुन्नी और तरला की सहेलियाँ रोटी की डलिया उठाने का अभिनय करती हुई एक पंक्ति में लड़कों के पास आकर उन्हें रोटी देने के अन्दाज़ में दो बार गाकर कहती हैं।]

मुन्नी आदि : ले लो रोटी ले लो दाल, चखकर हमें बताओ हाल।

चुन्नू आदि : ***(चिढ़ाकर)*** खट्टा- ***(पर जैसे ही मुन्नी गुस्से से उसकी ओर देखती है तो कहते हैं)*** नहीं, नहीं मीठा। खट्टा- नहीं नहीं, मीठा। ***(खाने का अभिनय करते हुए)*** खट्टा, मीटा, खट्टा मीटा, खट्टा, मीटा, खट्टा, मीठा।

(कुछ रुककर)

सब बच्चे : आधी खाएँ आधी रक्खें, अब सो जाएँ उठकर चक्खें।

[सब बच्चे सो जाते हैं। और पृष्ठभूमि से संगीत बजता है। धीरे-धीरे संगीत की ध्वनि कम होने के साथ-साथ बिल्ली की म्याऊँ सुनाई पड़ती है। बिल्ली का प्रवेश। वह चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर जब देखती है तो ओंठों पर जीभ को फेरकर बड़ी खुश होकर कहती है।]

बिल्ली : ओ हो! मक्खन कितना सारा, झट से चटकर करूँ किनारा।

[आगे बढ़कर ऊपर उछलती है, छींके पर से कुछ चीज़ लेने का अभिनय करती है।]

है छींके पर यह क्या रक्खा, बान रही क्या, अगर न चक्खा।

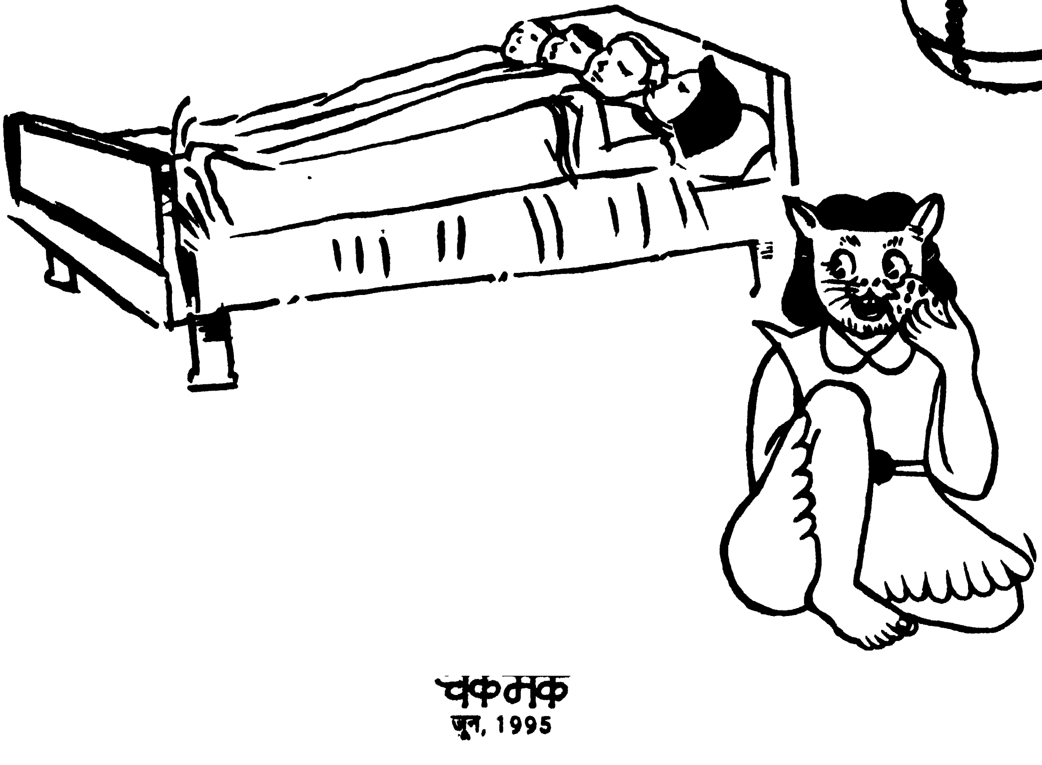

[हाथ बढ़ाकर रोटी निकालते हुए]

रोटी कैसी गरम-गरम है, घी से चुपड़ी नरम-नरम है।

[खाते हुए]

मक्खन रोटी चावल दाल, जी भर खाया कित्ता माल।

और देखो वह, मुन्नी, चुन्नू, टिनकू सारे,

खर्राटे भर रहे बिचारे।

अब चुपके से सरपट जाऊँ।

आलसियों को सबक सिखाऊँ।

म्याऊँ, म्याऊँ, म्याऊँ, म्याऊँ।

[बिल्ली जाती है। अँगड़ाई लेकर सरला उठती है और मक्खन के बर्तन को ख़ाली देखकर आश्चर्य से चिल्लाती हुई कहती है।]

सरला : ओ रे चुन्नू, टिनकू भाई, कहीं न मक्खन और मलाई।

मुन्नी : *(चौंककर उठते हुए)*

अरे ज़रा छींके तक जाना, और रोटी का पता लगाना।

हाय रे, ना रोटी, ना दूध मलाई, लगता है बिल्ली ने खाई।

तरला : हूं...ऊं...

जाटनी का बेटा: बिल्ली आई आधी रात,

खा गई रोटी खा गई भात।

एक बच्चा : क्या कहा,

बिल्ली आई आधी रात,

खा गई रोटी, खा गई भात?

टिनकू : चलो चलें बिल्ली की ढूँढ मचाएँ

फिर उसको चोरी का मज़ा चखाएँ।

सब बच्चे : ठीक-ठीक।

[बच्चे मिलकर बिल्ली को ढूँढने चलते हैं। साथ-साथ संगीत बजता है।]

चुन्नू : *(आवाज़ देकर)* अरी ऐ, कहाँ छिपी बैठी ओ बिल्ली?

मुन्नी : वा भई वा, तुम हो पूरे शेखचिल्ली।

चुन्नू : क्यों जी क्यों?

मुन्नी : और नहीं तो क्या?

बिल्ली क्या ख़ुद ही बोलेगी?

कुछ अपना रहस्य खोलेगी?

टिनकू : अच्छा चलो, वहाँ भी देखें।

[फिर सब बच्चे इधर-उधर ढूँढते हैं। कुछ बच्चे अन्दर जाते हैं, बाहर आते हैं। कुछ रंगमंच पर सामने की ओर देखते हैं, कभी बैठकर नीचे झुककर देखते हैं। और नहीं मिलने का हाव-भाव प्रकट करते जाते हैं। तभी तरला-सरला चीखकर कहती हैं।]

तरला-सरला : यह लो, मिल गई बिल्ली, मिल गया चोर।

चुन्नू-टिनकू : सच, सच, सच।

[बिल्ली घबराई हुई सी रंगमंच पर आ जाती है। सब उसे पकड़ते हैं।]

सब : करो पिटाई इसकी ज़ोर।
(हँसकर मारने का अभिनय करते हुए।)
बोल, अब खाएगी मेरी रोटी
अब खाएगी मेरी दाल?

बिल्ली : हाँ खाऊँगी सौ-सौ बार
जो सोओगे टाँग पसार।

[यह कहकर बिल्ली भागने का प्रयत्न करती है। पर सब बच्चे उसे घेर लेते हैं। तीन-चार बार ऐसा करने के बाद बिल्ली घेरा छोड़कर भाग जाती है, और सारे बच्चे 'पकड़ो पकड़ो' का शोर मचाते हुए उसके पीछे-पीछे भागते हैं।]

(पर्दा गिरता है)

('बच्चों के सौ नाटक' से साभार)
सभी चित्र : दीपक सोनार

चूहे के जज़्बात[1]

हमको नफ़रत की नज़र से देखते हैं सब यहाँ
हम ग़रीबों का बना दुश्मन है ये सारा जहाँ
ज़ुल्म सहते आए हैं सदियों से हम इन्सान के
सब के सब दुश्मन बने हैं क्यों हमारी जान के
क्यों भला हमसे ख़फ़ा है ये ज़माना इस क़दर
हक़ हमारा भी तो है दुनिया की हर इक चीज़ पर
अन्न हम करते हैं ज़ाए हमपे ये इल्ज़ाम है
दर हक़ीक़त नाम अपना मुफ़्त में बदनाम है
हमसे भी काफ़ी बड़े चूहे हैं भारत देस में
पहनकर कपड़े हैं बैठे आदमी के भेस में
दस्ते-मुफ़लिस[2] से जो अक़्सर छीनते हैं रोटियाँ
अन्न की गोदाम में उनके भरी हैं बोरियाँ
आफ़तें जिनकी वजह से टूटती हैं देश पर
सैंकड़ों इन्सां तड़पकर भूख से जाते हैं मर
उन जमाखोरों को पकड़ो तब बने कुछ बात भी
नातुवां[3] हैं हम दिखाते हो हमें मर्दानगी
बन्द अगर पिंजरे में करना है तो उनको कीजिए
ज़हर देना है अगर साहब तो उनको दीजिए

❑ डॉ. दीप बिलासपुरी

चित्र ❑ जया

1. जज़्बात = भावना 2. दस्ते-मुफ़लिस = गरीब हाथ
3. नातुवां = निर्बल

माथापच्ची

(1)

एक ऐसी संख्या है जिसमें से अगर 6 घटाकर फिर उसका 6 से गुणा करें या उसमें से 9 घटाकर फिर उसका 9 से गुणा करें तो हल वही आता है। कौन-सी है यह संख्या?

(2)

रामदीन के घर के पास एक चारागाह है। इसमें इतना चारा है कि 40 बकरियाँ 40 दिन आराम से चर लें। पर बकरियों की संख्या अगर 30 हो जाए तो इसी चारागाह से 60 दिन तक काम चल जाता है। पर अगर बकरियाँ 20 ही रहें तो कितने दिन तक काम चलेगा?

(3)

नकल करके चित्र बनाने में कुछ-न-कुछ नुक्स तो रह ही जाता है। देखो न, यहाँ भी इन दोनों चित्रों में दस अन्तर हैं। जरा ढूँढ निकालो उन्हें।

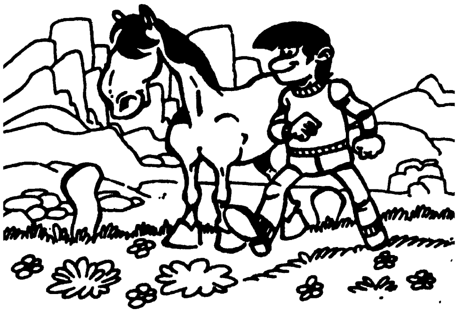

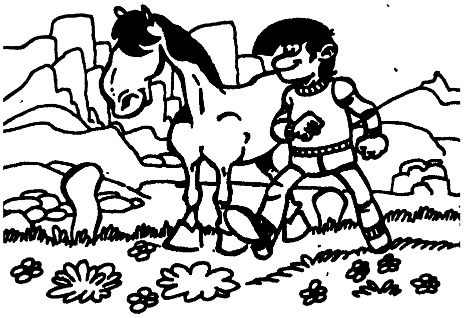

(4)

गुड़िया, सल्लो, बबलू और रमेश गणित में कच्चे थे। इसलिए उन्हें मास्साब के पास ट्यूशन के लिए जाना पड़ता था। एक दिन मास्साब ने चारों को चार सवाल दिए हल करने को। चारों के जवाब इस प्रकार थे :

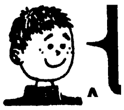

1. 50 | 2. 49 | 3. 51 | 4. 48

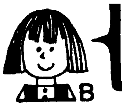

50 | 2. 48 | 3. 49 | 4. 51

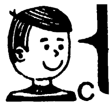

1. 48 | 2. 50 | 3. 51 | 4. 49

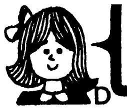

1. 51 | 2. 49 | 3. 50 | 4. 48

मास्साब ने जवाब देखे और कहा, "लगता है तुम लोग सुधर ही नहीं सकते। तुममें से तीन ने सिर्फ़ दो सवाल सही किए हैं। और एक ने तो एक भी सही हल नहीं निकाला।"

अगर छोटे आकार वाली संख्या सवाल का क्रमांक हो और बड़े आकार वाली संख्याएँ सवाल के हल, तो क्या तुम पता लगा सकते हो कि चारों सही हल क्या हैं? और किसने कितनी गल्तियाँ की हैं? इसके लिए सवाल जानना ज़रूरी नहीं। जवाबों की मदद से ही यह जानकारी निकालनी है तुम्हें।

(5)

भोपाल की जनसंख्या लगभग 14 लाख है। हम मान लेते हैं 14,00,000 ही। और हर साल इसमें 10% की वृद्धि हो जाती है। अब झट-से बताओ कि तीन साल बाद वहाँ की जनसंख्या कितनी होगी?

अ) 16,45,000 ब) 18,63,400

स) 17,37,200 द) 16,83,000

(6)

वह कौन-सा सवाल है जिसका सही जवाब कभी भी 'हाँ' हो ही नहीं सकता?

(7)

हिमालय पर पर्वतारोहण के लिए गए एक पर्वतारोही दल के कप्तान ने पर्वत की चोटी पर पहुँचकर नीचे बने बेस कैम्प से बेतार के ज़रिए सम्पर्क साधा। कप्तान ने बताया, 'यहाँ तापमान शून्य से चालीस डिग्री नीचे है। यानी माइनस चालीस डिग्री (-40°)।'

बैस केम्प पर डटे साथी ने पूछा, 'माईनस 40° क्या? सेल्सियस या फैरनहाइट?'

कप्तान ने कहा, 'सेल्सियस लिख लो। क्या फ़र्क पड़ता है!'

कप्तान ने ऐसा क्यों कहा?

वर्ग पहेली - 48

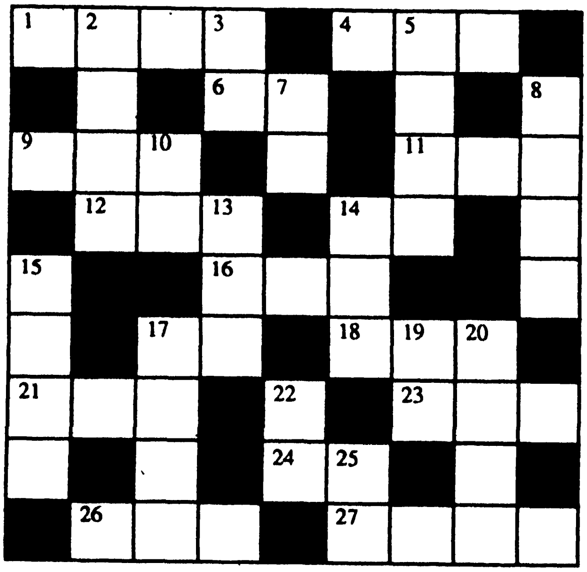

संकेत : बाएँ से दाएँ

1. उठने-बैठने, बातचीत करने का सलीका, शिष्टता (4)
4. बड़ा चबूतरा (3)
6. इलाही का बहाना (2)
9. सदा भला मन में बरामदा है (3)
11. यह आधा दावा है, वचन का (3)
12. जिसमें अभिनय करते हैं (3)
14. दूत है तो चलने-फिरने वाला होगा ही (2)
16. छोटा तालाब (3)
17. पीला (2)
18. खाने और तिरने में आवभगत (3)
21. वह माल उठा लेगा कुली (3)
23. आटे का एक गीला व्यंजन (3)
24. याद करने पर ही दोस्त आता है (2)
26. वन में मान है इन्सान का (3)
27. बहन होने का भाव (4)

संकेत : ऊपर से नीचे

2. नाहक लाल हुए जा रहे हो, रुक-रुककर बोलने में (4)
3. हिसाब की किताब (2)
5. जिसकी सीमा न हो (4)
7. फ़ौज का दस्ता (2)
8. अब दावत में भी दुश्मनी है (4)
10. बाज़ीगर (2)
13. फाटक पोतने में कबूतर बन गया (3)
14. इस पर सूत कातते हैं (3)
15. कोह और लाल मिलाने पर शोर होता है (4)
17. हाथी चलाने वाला (4)
19. इसका अक्सर ताड़ बन जाता है (2)
20. अगर काई हो तो हो जाता है (4)
22. सठिया गए हो तो जगह ढूँढो (2)
25. ईश्वर (2)

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक तीन माह तक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों उन्हें संकेत के ही नम्बर देकर लिख दें। वर्ग पहेली-48 का हल सितम्बर, 95 अंक में देखें।

खेल कागज़ का

कान के बुन्दे

इस गर्मी की छुट्टी में अगर तुम अपने दोस्तों के साथ मिलकर नाटक आदि करने का कोई प्रोग्राम बनाते हो तो नाटक की तैयारी करते समय पात्रों की वेशभूषा बदलने या सजाने की ज़रूरत पड़ सकती है। तब इस तरह की आकृतियाँ तुम्हारे काम आ सकती हैं। इन्हें कान के बुन्दे, गले का हार या मंच पर सजाने के लिए भी इस्तेमाल कर सकते हो। इन्हें बनाने के लिए कागज़ ऐसा हो जिसकी दोनों सतह अलग-अलग रंग की हों या कम से कम एक रंग की तो हों ही, तो अच्छा रहेगा।

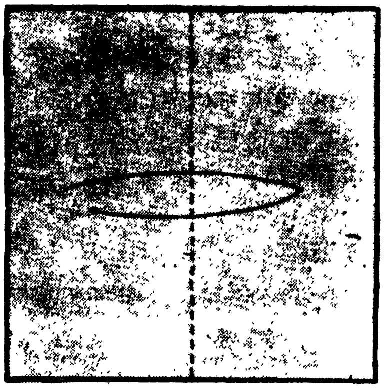

1. एक वर्गाकार कागज़ लो। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से मोड़ बनाकर वापस खोल लो।

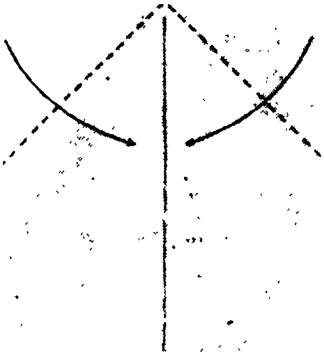

2. अब इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बना लो।

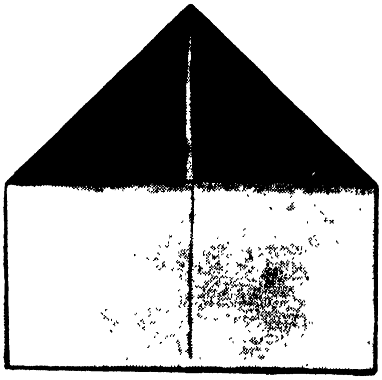

3. इस तरह की आकृति मिलेगी। अब इसे पलट लो।

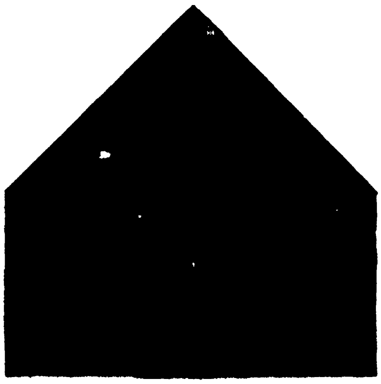

4. अब इस पर दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।

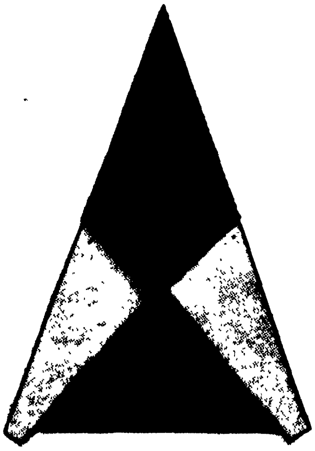

5. इस तरह की आकृति मिलेगी। इसे पलट लो।

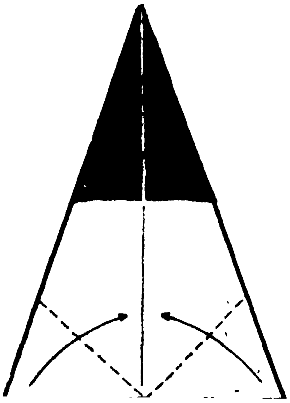

इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।

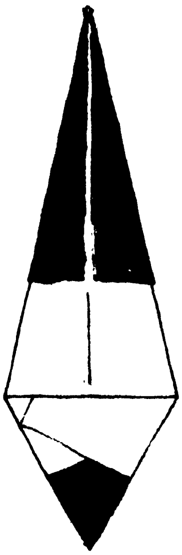

7. यह तैयार हो गया बुन्दा। बस इसके दोनों कोनों को थोड़ा गोंद से चिपका दो।

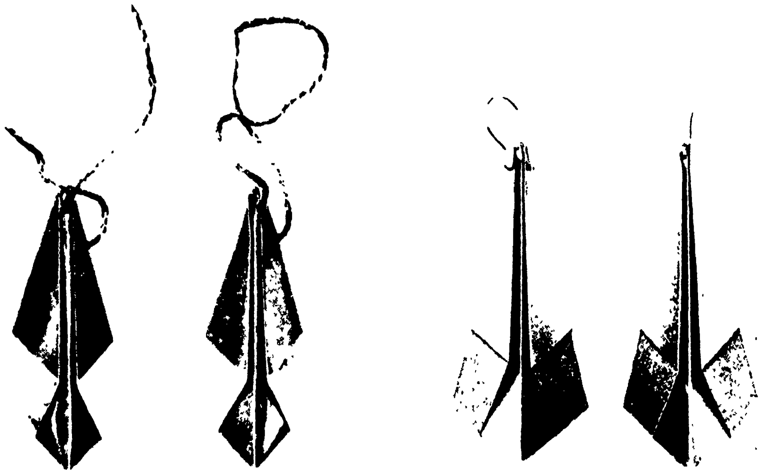

8. एक दूसरा वर्गाकार काग़ज़ लेकर एक और बुन्दा बना लो। ऊपर के सिरे पर डोरी पिरोकर कान में पहनने लायक कर लो। थोड़ी फेर बदल करके नई डिजाइन भी बना सकते हो।

तुम भी बनाओ...

अपने नाम की सील

तुमने देखा होगा कि बड़े लोगों के काग़ज़ातों में अक्सर सील लगी होती है। तुम्हारे रिपोर्ट कार्ड पर भी तुम्हारी टीचर या प्रधानअध्यापिका की सील लगी होती है। क्या तुम अपने लिए अपने नाम की एक ऐसी ही सील बनाना चाहोगे? इसके लिए एक सपाट चिकनी लकड़ी का टुकड़ा, ट्रेसिंग काग़ज़, धागा और चिपकाने के लिए रबर सोल्यूशन की ज़रूरत होगी। इन्हें बटोर लो। और हाँ, एक पेंसिल भी लेते आना।

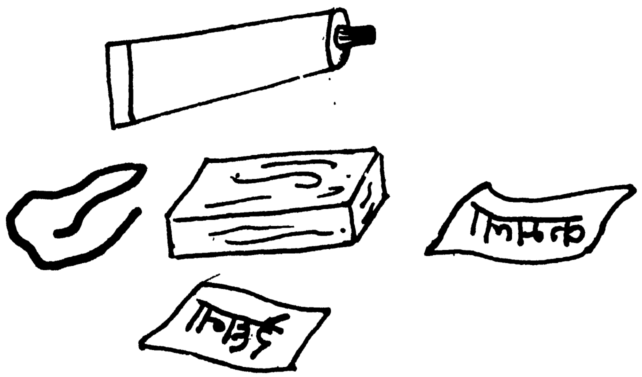

अब यह तय कर लो कि अपनी सील कैसी बनाना चाहते हो। अपना नाम अपनी लिखाई में लिखना चाहते हो या साधारण-सा? आसपास कुछ सजावट करना चाहते हो कि नहीं? जैसा भी चाहो वैसा ट्रेसिंग काग़ज़ पर बना लो। अब इसे उलटा करके लकड़ी के गुटके पर चिपका दो। ध्यान रखना कि काग़ज़ उस तरफ चिपकाना जिस तरफ लकड़ी सबसे ज़्यादा चिकनी हो। अगर लकड़ी खुरदुरी हो तो रेगमाल जुगाड़कर उसे घिसकर चिकना बना लो।

अब धागे का काम है। इसे किसी दोस्त की मदद लेकर कई बार बल दे दो। जब धागा एकदम कड़क-सा हो जाए तो उस पर रबर सोल्यूशन फेर दो ताकि बल खुले नहीं। और फिर धागे को लकड़ी पर चिपके ट्रेसिंग पेपर की लिखाई पर सफाई से चिपकाओ।

हो गई तुम्हारी सील तैयार। बस इसके सूखने की देरी है। इसे काम में लाने के लिए अगर तुम्हारे पास स्याही पैड न हो तो किसी डिब्बी में कपड़े की पाँच-छह परत बिछाकर, उस पर स्याही डालकर पैड बना लो। ▫▫

मनुष्य महाबली कैसे बना!

पहले खानाबदोश

मनुष्य ने जिस अद्‌भुत भंडारघर की खोज की थी, उससे वह अधिकाधिक भेंटें पाता रहा। स्तेपी में हज़ारों ही भेड़ें चरती थीं। खेतों में नरम काली जमीन में ज़ोर लगाकर चलते बैलों को हलवाला हाँकता था।

मनुष्य के श्रम ने उसे कितने ही वर दे दिए थें, लेकिन अब उसे सख़्त मेहनत से और ज्यादा काम करना पड़ता था।

नदियों के निचले मैदानों में, जहाँ हर वसन्त में बाढ़ का पानी धरती को उपजाऊ बनाता था, प्रकृति स्वयं अच्छी फ़सल पैदा करने में हाथ बँटाती लगती थी।

लेकिन यहाँ भी काश्तकार के हाथ आराम नहीं करते थे। लोग पानी को खेतों में रोक रखने और जहाँ उसकी ज़्यादा ज़रूरत हो, उसे वहाँ भेजने के लिए नालियाँ खोदते और बाँध बनाते थे।

लोग नदी की प्रार्थना किया करते थे, जो उनकी मिट्टी को उपजाऊ बनाती थी और वे इसी बीच इस बात को पूरी तरह से भुला देते थे, कि अगर उन्होंने ज़मीन पर कमरतोड़ मेहनत न की होती, तो उस पर घासपात के अलावा और कुछ न उगता।

जैसे-जैसे समय गुज़रता गया, काश्तकार की परेशानियाँ बढ़ती गईं। पशुपालक को भी दम लेने की फ़ुरसत न थी। झुण्ड जितना बड़ा होता, चरवाहे के लिए उतना ही अधिक काम होता। दर्जन भर भेड़ों की देखभाल एक बात है, लेकिन हजारों का ध्यान रखना और बात है। बड़ा झुण्ड चरागाह का ज्यादा तेजी के साथ सफ़ाया कर देता था और इसलिए उसे गाँव से दूर-दूर तक दूसरे चरागाहों की तरफ ले जाना पडता था।

अन्त में, पूरे के पूरे गाँव अपने डेरे-डंडे उखाड़ते और झुण्डों के पीछे चल देते। लोग अपने तम्बू और सामान अपने ऊँटों की पीठ पर लाद लेते और अपनी ज़िन्दा दौलत को अपने आगे-आगे हाँकते हुए चल पड़ते।

पीछे वे उजाड़ खेतों को छोड़ जाते, जो शीघ्र ही घासपात से भर जाते। मगर उन्हें इन खेतों को छोड़ने का असल में कोई दुःख न था, क्योंकि सूखे मैदान में अच्छी फ़सल बड़ी ही विरल बात थी।

इतिहास में पहली बार केवल एक ही क़बीले के लोगों में नहीं, बल्कि विभिन्न क़बीलों के बीच भी श्रम का विभाजन हुआ।

मैदान में चरवाहों के ऐसे क़बीले प्रकट हुए, जो ढोर पालते थे और अनाज से उनका विनिमय (अदला-बदली) करते थे। वे कभी एक ही जगह नहीं रहते थे, बल्कि एक चरागाह से दूसरे चरागाह जाते हुए जगह-जगह घूमते रहते थे। खानाबदोशों की ज़िन्दगी तूफ़ानी लेकिन आज़ाद थी।

वे अपने डेरे खुले मैदान में डाल देते थे, ऊपर तारों-भरे असीम आकाश के अलावा और कुछ न होता था, विराट मैदान ही उनका घर था। उनकी लम्बी-लम्बी यात्राओं में बच्चे ऊँटों की झूलती पीठों पर झोंके खाते-खाते ही सो जाते थे। उन्होंने बस एक इसी पालने को जाना था।

फिर भी, जिस जमाने की हम बात कर रहे हैं, उसमें चरवाहे क़बीलों में अभी तक बहुत कम असली खानाबदोश थे।

खानाबदोश क़बीले की जिन्दगी न शान्तिमय थी और न ही शान्त। अपनी घुमक्कड़ी के दौरान खानाबदोश जब काश्तकारों के खेतों और झुण्डों पर आ पहुँचते, तो वे अक़्सर उस चीज़ को जबरन ले लेते थे, जिसे वे खुद नहीं बोते थे। किसी नदी की घाटी से नीचे आकर या मैदान में से जाते-जाते जंगल के छोर की तरफ बढ़कर वे रास्ते में पड़नेवाले गाँवों को जलाते और लूटते हुए, फसल को रौंदते हुए, जानवरों को हाँकते हुए और ग्रामवासियों को कैदी बनाते हुए आगे बढ़ते थे।

उन्हें क़ैदियों की ही सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी, क्योंकि लोगों को काम करने के लिए, झुण्डों की देखभाल करने के लिए मजबूर किया जा सकता था। खानाबदोश चरवाहे इस तरह रहते थे। लेकिन किसान भी कोई विशेष शान्ति-प्रेमी नहीं थे।

शरद में, जब फ़सल घर आ जाती थी, तो उन्हें अपने पड़ोसियों के खाद्य-भण्डारों, कपड़ों, गहनों और हथियारों को लूटने के लिए उन पर हमला करने में ज़्यादा संकोच न होता था। यहाँ भी सबसे मूल्यवान जयचिह्न उनके क़ैदी ही होते थे, क्योंकि किसानों को भी नालियाँ खोदने, बाँध बनाने और बैल हाँकने के लिए अतिरिक्त काम करनेवालों की ज़रूरत पड़ती थी।

आरम्भ में क़ैदियों को ग़ुलाम नहीं बनाया जाता था, क्योंकि एक जोड़ा फालतू हाथों से कोई विशेष लाभ नहीं प्राप्त किया जा सकता था। ग़ुलाम आदमी यद्यपि काम करता पर वह जितना कमाता था, उतना ही खा लेता था।

जब बड़े-बड़े झुण्ड पैदा हो गए, जब एक आदमी जितने अनाज, माँस तथा ऊन का उपयोग कर सकता था, उसका काम उससे ज्यादा पैदा करने लगा, तो सभी कुछ बदल गया। किसान

अपने अनाज का ऊन से विनिमय करने के लिए अपनी आवश्यकता से अधिक धान्य घासें पैदा करने लगे। इसी प्रकार चरवाहों को अपने कपड़ों और माँस के लिए भेड़ों के जितने बड़े रेवड़ की ज़रूरत थी, वे उससे बड़े रेवड़ रखने की कोशिश करते थे, क्योंकि अतिरिक्त ऊन को अनाज और हथियारों से बदला जा सकता था।

इस विनिमय और आए दिन की डकैती ने कुछ क़बीलों और परिवारों को औरों से ज़्यादा धनी बना दिया। उनके झुण्ड ज़्यादा बड़े थे और वे ज़्यादा धान्य घासें बोते थे। लेकिन उनके पास इन झुण्डों की देखभाल, इन ज़मीनों की जुताई के लिए काफ़ी मज़दूर न होते थे। इसीलिए कुछ लोग औरों को ग़ुलाम बनाने लगे। ग़ुलाम का काम उसके मालिक का और ख़ुद उसका पेट भर देता था। मालिक को बस यह देखना होता था कि ग़ुलाम काम ज़्यादा करे और खाए कम। और इसलिए एक आदमी ने दूसरे आदमी को अपना ज़िन्दा औज़ार बना लिया।

मनुष्य को गिराया गया, उसके गले में यों जुआ डाल दिया गया, मानो वह कोई बैल हो। आज़ादी के रास्ते में, प्रकृति की शक्तियों पर अपना अधिकार पाने के रास्ते में मनुष्य स्वयं अपने ही जैसे व्यक्ति का दास हो गया।

पहले ज़मीन उन सबकी संयुक्त सम्पत्ति थी, जो उस पर काश्त करते थे। अब ग़ुलाम उस ज़मीन की काश्त करने लगा, जो उसकी नहीं थी। जिस बैल को वह हाँकता था, वह उसका बैल नहीं था। जिस फ़सल को वह काटता था, वह उसकी फ़सल नहीं थी। प्राचीन मिस्र में बैलों की जोड़ी को हाँकते समय ग़ुलाम गुनगुनाता था :

गेहूँ की बालियों को रौंद दे, रे बैल!
बालियों को रौंद दे!
फ़सल यह मेरे मालिक की है।

मानव के इतिहास में पहली बार मालिक और दास प्रकट हुए।

याद और यादगार

अतीत की हमारी यात्रा ख़ासी मुश्किल रही है, क्योंकि हम गुफाओं की भूलभुलैयाओं में पर्यटकों की भाँति नहीं, खोजियों की तरह घूमे हैं। हर नई चीज़ जो हमें मिली, वह एक रहस्य थी, जिसे हल करना था। रास्ते पर कहीं कोई पथचिन्ह नहीं थे, हमें हमारी खोज में सहायता देने के लिए, सही दिशा दिखाने वाले तीर के निशान नहीं थे। और पाषाण युग में रहनेवाला मानव छोड़ता भी तो हमारे लिए किस प्रकार के निशान छोड़ सकता था? उसे तो लिखना भी नहीं आता था।

अब आख़िर हम एक ऐसी सड़क पर आ गए हैं, जिस पर सारे रास्ते निशान लगे हुए हैं। हमें पहले शिलालेख, समाधि पत्थरों और

मंदिरों की दीवारों पर मिलते हैं। अब ये जादू-टोने के वे संकेत नहीं रहे हैं, जो भूत-प्रेतों को दूर रखने के लिए बनाए जाते थे। उन चित्रों में पूरी की पूरी कहानियाँ हैं - लोगों के लिए और लोगों के बारे में कहानियाँ।

अभी तक हमारे अक्षरों से मिलती-जुलती भी कोई चीज़ नहीं है। बैल के लिए बैल की तस्वीर है, पेड़ को अपनी सभी डालियों के समेत बनाया गया है।

लिखने का इतिहास चित्र-शब्दों के साथ शुरू होता है। इन चित्रों के सरल बनने और संकेतों में परिवर्तित होने में कई सदियाँ लग गईं।

उन चित्रों का अनुमान करना कठिन है, जिनसे हमारी वर्णमालाओं के अक्षर निकले हैं। यूरोपीय वर्णमालाओं का उपयोग करनेवालों में कौन यह सोच सकता है कि "A" अक्षर बैल का सिर है? लेकिन अगर तुम "A" का सिर नीचे और पैर ऊपर कर दो, तो तुम देखोगे कि यह सींगदार सिर से मिलता-जुलता है। प्राचीन शामियों की भाषा में यह सींगदार सिर "A" के लिए - उनकी वर्णमाला के पहले अक्षर "अलिफ" के लिए था, जिसका मतलब था "बैल"।

इसी प्रकार हम वर्णमाला के सभी अक्षरों के इतिहास का पता लगा सकते हैं। हमें पता चलेगा कि "O" आँख के लिए था और "P" लम्बी गर्दनवाले सिर के लिए।

लेकिन यह बहुत आगे की बात है। असल में, हम अपनी कहानी में अभी उसी जगह पहुँचे हैं, जब पहली चित्रलिपि प्रकट हुई थी। मनुष्य ने लिखना बहुत धीरे-धीरे और बड़ी अनिश्चिततापूर्वक सीखा। फिर भी, अब समय आ गया था कि वह लिखना सीखे।

जब तक कि प्राप्त करने के लिए अधिक जानकारी या तथ्य नहीं थे, मनुष्य जितनी भी बातों को जानते थे, उन्हें याद रखा जा सकता था। किंवदन्तियाँ, पौराणिक कथाएँ और परियों की कहानियाँ एक आदमी से दूसरे आदमी के पास चली जाती थीं। हर बूढ़ा आदमी एक ज़िन्दा किताब था। लोग कहानियों, पौराणिक कथाओं और सामान्य आचार के नियमों को याद कर लेते और अपने बच्चों को एक मूल्यवान धरोहर के रूप में दे जाते, ताकि अपनी बारी में उनके बच्चे उन्हें अपने बच्चों तक पहुँचा दें। लेकिन यह धरोहर जितनी भारी होती गई, इसे पूरी तरह से याद करना उतना ही मुश्किल होता गया।

और इसलिए याद की मदद को यादगार आई। एक के अनुभव को दूसरे तक पहुँचाने में लिखित भाषा, बोली जाने वाली भाषा की सहायता करने लगी। किसी सरदार की विजय यात्राओं और लड़ाई

के कारनामों को बाद की पीढ़ियों के दिमाग़ों में ताज़ा रखने के लिए उन्हें उसकी समाधि पर चित्रित कर दिया जाता था।

जब अन्य मित्र क़बीलों के पास दूत भेजे जाते थे, तो भोजपत्र के टुकड़े पर या मिट्टी की तख़्ती पर याद दिलाने का काम करने के लिए कितने ही चित्र-शब्द बना दिए जाते थे।

समाधि-पत्थर पहली पुस्तक था, तो भोज की छाल का एक टुकड़ा पहला पत्र था।

हमें अपने टेलीफोनों, रेडियो और टेप रिकार्डरों पर अभिमान है, जो जगह और समय की दूरी पर काबू पाने में हमारी सहायता करते हैं। हमने आवाजों को सैकड़ों और हज़ारों किलोमीटर की दूरियों पर भेजना सीख लिया है। टेपों और रेकार्डों पर अंकित आवाज़ें अब से सैकड़ों साल बाद भी साफ़-साफ़ बोलेंगी। हमने बड़ी भारी प्रगति कर ली है, लेकिन हमें अपने से पहले वाले लोगों की उपलब्धियों को भूल नहीं जाना चाहिए। हमारे पैदा होने के बहुत पहले हमारे पूर्वजों ने पहले-पहले भोज की छाल पर पत्र लिखकर दूरी को और पत्थर के स्मारकों पर संदेश खोदकर समय को जीत लिया था।

इनमें से कई स्मारक हज़ारों वर्ष पहले के महान अभियानों और युद्धों की अपनी कहानी सुनाने के लिए अभी तक बचे रहे हैं। भाले और तलवार चलाते योद्धाओं की आकृतियाँ पत्थर पर नक्श हैं। ये विजयोत्सव मनाते घर लौटते विजेता हैं, जबकि उनके पीछे सिर झुकाए और कमर के पीछे बंधे हाथ उनके क़ैदी घिसटते चले आ रहे हैं। और यहाँ, चित्र-लिपियों में, हमें हथकड़ी का एक चित्र मिलता है, जो दासता और असमानता का निशान है। यह निशान हमें मानव-जाति के इतिहास के एक नये अध्याय के प्रारम्भ के बारे में, दास-प्रथा के आरम्भ के बारे में बताता है।

बाद में मिस्र के मंदिरों की दीवारों पर हमें ऐसे कितने ही चित्र-साक्षी मिलेंगे।

एक चित्र में एक निर्माणस्थली के लिए ईंटें ले जाते ग़ुलामों की एक लम्बी कतार दिखाई गई है। एक ग़ुलाम ने कुछ ईंटें अपने कंधे पर जमा ली हैं और वह इस ढेर को दोनों हाथों से सहारा दे रहा है। दूसरा एक बहंगी में ईंटें ले जा रहा है, जैसे किसान पानी की दो बाल्टियों को ले जाते हैं। राजगीर एक दीवार बना रहे हैं। ईंटों के ढेर पर एक सर्वेक्षक, को बैठा दिखाया गया है। उसने अपनी कुहनियों को अपने घुटनों पर टेक रखा है और उसके हाथ में एक लम्बी छड़ी है। उसे काम नहीं करना पड़ता। उसका काम औरों से काम करवाना है। एक दूसरा सर्वेक्षक निर्माणस्थली के पास इधर-उधर घूम रहा है। उसने एक ग़ुलाम के सिर पर अपनी छड़ी तान रखी है, क्योंकि ग़ुलाम ने प्रत्यक्षतः उसकी मरज़ी के ख़िलाफ़ कुछ किया है।

दास और स्वाधीन लोग

आरम्भ में ग़ुलामों को नीचा नहीं समझा जाता था। आज़ाद आदमी और ग़ुलाम एक ही बड़े परिवार या बिरादरी के सदस्यों के रूप में साथ-साथ रहते और काम करते थे।

पिता-कुल पिता - इस पारिवारिक बिरादरी का प्रमुख और शासक होता था। उसके बेटे, उनकी पत्नियाँ और बच्चे और उसके ग़ुलाम उसके आश्रय में रहते थे और पूर्णतः उसके अधीन होते थे। पिता जितनी सुगमता से अपने उद्दंड ग़ुलाम को कोड़ों से पीट सकता था, उसी तरह वह अपने उद्दंड पुत्र को भी पीटता था।

बूढ़ा ग़ुलाम जब अपने मालिक से बातें करता था, तो वह उसे सीधे 'बेटा' कहता था। जबकि रिवाज़ के अनुसार मालिक बूढ़े ग़ुलाम को 'बाबा' कहता था।

जब पुराना मालिक मर जाता, तो उसके ग़ुलाम उसके अन्य माल-मत्ते, सामान के संग्रह, जानवरों के झुण्डों सहित उनके बेटों की सम्पत्ति बन जाते थे। इस पारिवारिक बिरादरी में समानता का कोई भी लेश बाक़ी न था।

यहाँ पिता अपने बच्चों पर शासन करता था, पति अपनी पत्नी पर हुकूमत करता था, सास अपनी बहुओं पर और बड़ी बहुएँ छोटी बहुओं पर हुकूमत चलाती थीं। लेकिन ग़ुलाम तो सीढ़ी पर सबसे नीचे था। उस पर हर कोई अपना हुक्म चलाता था।

कुलों और बिरादरियों में पहले जो बराबरी थी, वह भी जाती रही। किसी के पास ज़्यादा ढोर थे, तो किसी के पास कम। और ढोर सम्पत्ति के प्रतीक थे। बैल के बदले कपड़े और हथियार लिए जा सकते थे। काँसे के सबसे पहले सिक्कों के बैल की फैली हुई खाल की आकृति में ढाले जाने का यही कारण था।

पर एक ग़ुलाम तो एक बैल से भी ज़्यादा कीमती था।

ग़ुलाम सूअरों, गायों और भेड़ों की देखरेख करता था। उनके साथ दिन भर चरागाहों में रहने के बाद शाम को वह उन्हें बाड़ों और थानों में बन्द करता था। दास फ़सल की कटाई में मदद देता था, दास ही अंगूर से रस और जैतून से तेल निकाला करता था। ग़ुलाम स्वतंत्र आदमी की सहायता करता था, लेकिन ग़ुलाम ही सबसे मुश्किल और सबसे गन्दे काम को करता था।

अब लड़ाइयाँ लाभदायी हो गईं, क्योंकि लड़ाइयाँ ग़ुलाम पैदा करती थीं और ग़ुलाम अपने स्वामियों के लिए अपार सम्पदा पैदा करते थे। और इसलिए स्वतंत्र लोग अपने जानवरों की देखभाल और

पालन और अपनी ज़मीनों की जुताई करने के लिए ग़ुलामों को छोड़कर ख़ुद लड़ाई पर चले जाया करते थे।

लड़ाइयाँ और भी ज़्यादा काम लाती थीं। दूसरे क़बीलों पर हमला करने के लिए लोगों को तलवारों और भालों और रथों की ज़रूरत थी। योद्धा अपने रथों को तेज़ दौड़ने वाले घोड़े में जोतते और लड़ाई के मैदानों में तेज़ी के साथ घूमते थे।

लेकिन लड़ाई में हमला और बचाव, दोनों ही होते हैं। दुश्मन की तलवारों और भालों से बचने के लिए योद्धाओं को सिर और चेहरे को ढकने वाले कवच पहनने पड़ते थे और ढालों का इस्तेमाल करना पड़ता था। अंततः सामूहिक निवासों को बड़े-बड़े पत्थरों की बनी मज़बूत दीवारों से घेर दिया गया।

कुल जितना धनी और शक्तिशाली होता था, अपनी प्रतिरक्षा पर वह उतना ही अधिक समय और श्रम लगाता था। बचाने के लिए उसके पास काफ़ी कुछ होता था।

जल्द ही भारी फाटकों और दीवारों पर बुर्जों से लैस दर्ज़नों कमरों और भण्डारघरों वाले विशाल कोटले पहाड़ियों की चोटियों पर नज़र आने लगे।

(अगले अंक में जारी)
'मनुष्य महाबली कैसे बना।' से साभार
प्रस्तुति : राजेश उत्साही

माथापच्ची हल : मई, 95 अंक के

1. 98-76+54+3+21 = 100
2. बबलू का हाथ पाँचवीं मंज़िल वाले बटन तक ही पहुँचता था।
3. दो तरीक़ों से पीपे में पानी का पता किया जा सकता है। एक तो रस्सी में पत्थर बाँधकर उसे पानी में लटकाकर पानी की ऊँचाई के साथ पीपे की ऊँचाई की तुलना करके। दूसरा बिना पानी गिराए पीपे को एक तरफ झुकाकर अगर उसकी तली दिखाई देती है तो आधे से कम पानी है। अगर तली नहीं दिखती तो पीपा आधे से ज़्यादा भरा हुआ है।
4. 4, 6, 10, 16
6. सोती हुई बिल्ली
7. इन्दौर से रवाना होते समय बस में 16 पुरुष और 32 महिला सवारियाँ थीं।
8. नम्रता के साथ का व्यक्ति उसका अपना भाई था।

वर्ग पहेली - 44 : हल

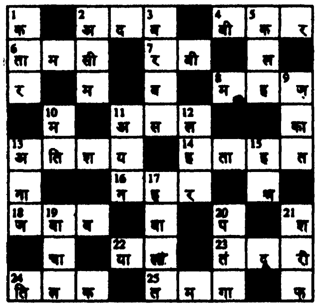

वर्ग पहेली - 44 का एक भी सर्वशुद्ध हल नहीं प्राप्त हुआ है। एक ग़लती वाले हल भेजने वाले पाठक हैं अजय एवं चन्द्रकान्ता त्रिपाठी, विठौली, सीधी और अनुपमा पटेल, डोंगरगढ़, दुर्ग, दोनों म.प्र.। इन्हें तीन माह तक उपहार में भेजी जाएगी।

आशीष कशीव, चौथी, टिमरनी, म.प्र.

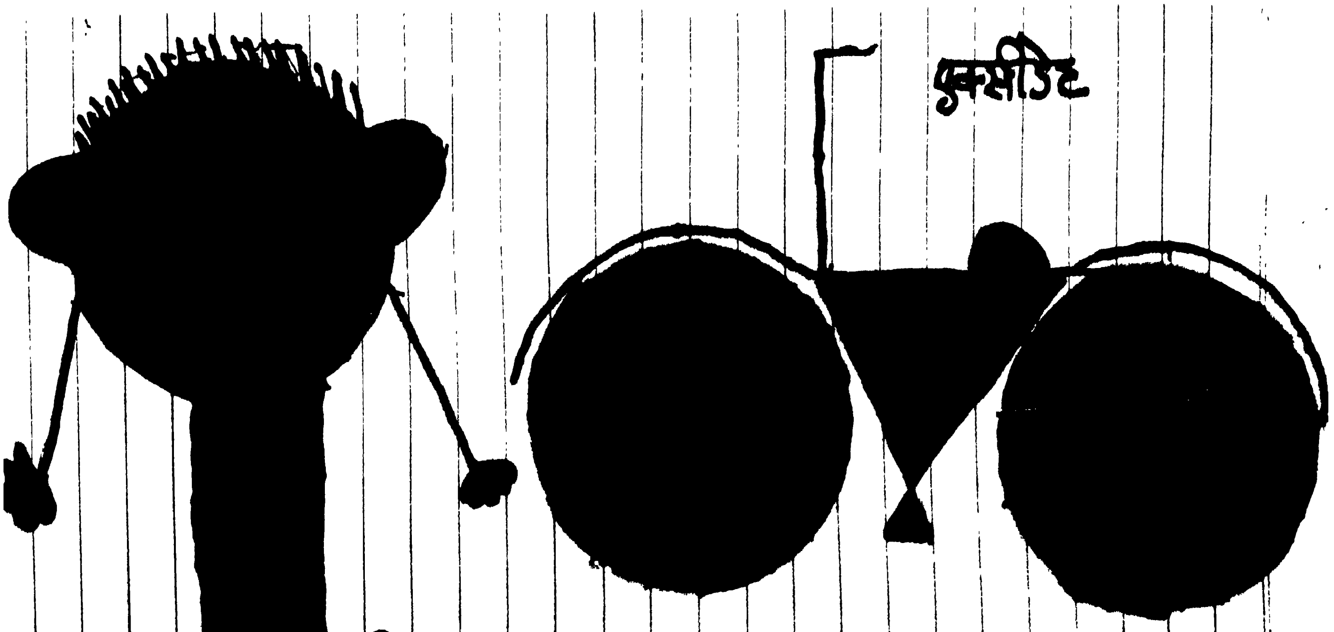

रेखा भिटोलिया, उज्जैन, म.प्र.

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/95

रजत शर्मा, चार वर्ष, उज्जैन, म.प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना